भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ६

सोमवार ११ नवम्बर, '६८

अन्य पृष्ठों पर

विएतनाम की बमवर्षा बन्द —रुद्रभान ६६

जॉनसन की भेंट —सम्पादकीय ६७

मानव-देह की सार्थकता —विनोबा ६८

सर्वोदय की क्रान्ति —धीरेन्द्र मजूमदार ६९

यह है हमारी संस्कृति !—देवी रीझवानी ७१

हाथल की ग्रामसभा... —अवध प्रसाद ७२

पंजाब और उत्तर प्रदेश में कुष्ठ-सेवा-कार्य —मारकण्डेय ७३

चिन्तन-प्रवाह —सिद्धराज ढड्ढा ७५

सेठ सोहनलालजी दूगड़ —सिद्धराज ढड्ढा ७६

राजस्थान की चिट्ठी ७८

आन्दोलन के समाचार ७०

टीकमगढ़ जिलादान समारोह —राही ८०

आवश्यक सूचना

'भूदान-यज्ञ' के १८ नवम्बर के अंक के साथ का 'गाँव की बात' का परिशिष्ट मध्यावधि चुनाव की दृष्टि से प्रकाशित किया जा रहा है। वह चित्रमय परिशिष्टांक मतदाता-शिक्षण में पूरी तरह मददगार होगा। आशा है, ज्यादा-से-ज्यादा मतदाताओं तक वह अंक पहुँचाया जायेगा। —व्यवस्थापक

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

मेरे प्रयोगों के परिणाम अन्तिम नहीं

मैं मानता हूँ कि मेरे सब प्रयोगों का पूरा लेखा जनता के सामने रहे, तो वह लाभदायक सिद्ध होगा—अथवा यों समझिये कि यह मेरा मोह है। राजनीति के क्षेत्र में हुए मेरे प्रयोगों को तो अब हिन्दुस्तान जानता है, यही नहीं बल्कि थोड़ी-बहुत मात्रा में सभ्य कही जानेवाली दुनिया भी उन्हें जानती है। मेरे मन में इसकी कीमत कम-से-कम है। और, इसलिए इन प्रयोगों के द्वारा मुझे 'महात्मा' का जो पद मिला है, उसकी कीमत भी कम ही है। कई बार तो इस विशेषण ने मुझे बहुत अधिक दुःख भी दिया है। मुझे ऐसा एक भी क्षण याद नहीं है, जब इस विशेषण के कारण मैं फूल गया होऊँ। लेकिन अपने आध्यात्मिक प्रयोगों का, जिन्हें मैं ही जान सकता हूँ और जिनके कारण राजनीति के क्षेत्र में मेरी शक्ति भी जन्मी है, वर्णन करना मुझे अवश्य ही अच्छा लगेगा। अगर ये प्रयोग सचमुच आध्यात्मिक हैं, तो इनमें गर्व करने की गुंजाइश ही नहीं। इनसे तो केवल नम्रता की ही वृद्धि होगी। ज्यों-ज्यों मैं विचार करता जाता हूँ, भूतकाल के अपने जीवन पर दृष्टि डालता जाता हूँ, त्यों-त्यों अपनी अल्पता मैं स्पष्ट ही देख सकता हूँ। मुझे जो करना है, तीस वर्षों से मैं जिसकी आतुर भाव से रट लगाये हुए हूँ, वह तो आत्म-दर्शन है, ईश्वर का साक्षात्कार है, मोक्ष है। मेरे सारे काम इसी दृष्टि से होते हैं। मेरा सब लेखन भी इसी दृष्टि से होता है, और राजनीति के क्षेत्र में मेरा पड़ना भी इसी वस्तु के अधीन है।

लेकिन ठेठ से ही मेरा यह मत रहा है कि जो एक के लिए शक्य है, वह सबके लिए भी शक्य है। इस कारण मेरे प्रयोग खानगी नहीं हुए, नहीं रहे। उन्हें सब देख सकें, तो मुझे नहीं लगता कि उससे उनकी आध्यात्मिकता कम होगी। अवश्य ही कुछ चीजें ऐसी हैं, जिन्हें आत्मा ही जानती है, जो आत्मा में ही समा जाती हैं। परन्तु ऐसी वस्तु देना मेरी शक्ति से परे की बात है। मेरे प्रयोगों में तो आध्यात्मिक का मतलब है नैतिक, धर्म का अर्थ है नीति, आत्मा की दृष्टि से पाली गयी नीति धर्म है।

इन प्रयोगों के बारे में मैं किसी भी प्रकार की संपूर्णता का दावा नहीं करता। जिस तरह वैज्ञानिक अपने प्रयोग अतिशय नियमपूर्वक, और विचारपूर्वक बारीकी से करता है, फिर भी उनसे उत्पन्न परिणामों को वह अन्तिम नहीं कहता। वे परिणाम सच्चे ही हैं इस बारे में भी वह साशंक नहीं तो तटस्थ अवश्य रहता है, अपने प्रयोगों के विषय में मेरा भी वैसा ही दावा है। मैंने खूब आत्म-निरीक्षण किया है, एक-एक भाव की जाँच की है, उसका पृथक्करण किया है। किन्तु उसमें से निकले हुए परिणाम सबके लिए अन्तिम ही हैं, वे सच हैं अथवा वे ही सच हैं, ऐसा दावा मैं कभी करना नहीं चाहता। हाँ, यह दावा मैं अवश्य करता हूँ कि मेरी दृष्टि से ये सच हैं, और इस समय तो अन्तिम जैसे ही मालूम होते हैं।

—मो० क० गांधी

आश्रम साबरमती, मार्गशीर्ष, शुक्ल : ११, १९८२

www.vinoba.in

विएतनाम की बम-वर्षा बन्द होने से विश्व-शान्ति की सम्भावना सबल

विएतनाम का युद्ध अमेरिका की वैदेशिक नीति के गले में फाँस बनकर अटका हुआ था। न अमेरिका विएतनाम में परास्त होना चाहता था और न ही विरोधी को पराजित कर पा रहा था। वर्षों से अमेरिकी जनमत विएतनाम-युद्ध के खिलाफ अपनी नाराजगी और चिन्ता प्रकट करता रहा है।

अमेरिका के राष्ट्रपति जॉनसन ने १ नवम्बर को वाशिंगटन में उत्तर विएतनाम पर बम-वर्षा बन्द करने की ऐतिहासिक घोषणा की। अपने राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि यह कदम उन्होंने सेना के सर्वोच्च सलाहकारों की सहमति के बाद उठाया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस निर्णय से विएतनाम-युद्ध को शान्तिपूर्ण ढंग से समाप्त करने की दिशा में प्रगति होगी।

अमेरिकी राष्ट्रपति की इस घोषणा का दुनिया के देशों में हार्दिक स्वागत हुआ।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के महामंत्री श्री ऊथाँ ने इस घोषणा का भरपूर स्वागत करते हुए इसे एक ऐसा आवश्यक कदम माना जिसकी एक अर्से से आवश्यकता थी। उन्होंने श्री जॉनसन के निर्णय पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की।

पश्चिमी यूरोप के देशों में राष्ट्रपति जॉनसन की घोषणा का तुरन्त स्वागत हुआ। पश्चिम जर्मनी के सरकारी प्रवक्ता ने कहा कि इस निर्णय ने एक बार फिर से यह साबित किया है कि अमेरिकी सरकार विएतनाम-युद्ध समाप्त करने को कितनी तैयार है।

ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों ने भी घोषणा की तारीफ की। ब्रिटिश वैदेशिक विभाग के प्रवक्ता ने कहा कि इस सम्बन्ध में सविधि घोषणा प्रधानमंत्री श्री विल्सन यथा-समय करेंगे। प्रवक्ता ने कहा कि इस निर्णय की पूर्वसूचना ब्रिटिश सरकार को दी गयी थी।

फ्रांस के राष्ट्रपति श्री देगाल ने श्री जॉनसन की इस घोषणा का स्वागत करते हुए इसे विएतनाम-युद्ध समाप्त करने की दिशा में उठाया गया मौजूँ कदम माना।

भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बम-वर्षा बन्द होने की सूचना मिलते ही इसे 'शान्ति की दिशा में उठाया गया कदम' कहकर इसका स्वागत किया। उन्होंने कहा कि सचमुच यह बड़ी अच्छी खबर है। अमेरिकी राष्ट्रपति के इस 'साहस और सूझ-बूझ भरे' कर्म के लिए इन्दिरा गांधी ने उन्हें बधाई दी और उन सब लोगों को धन्यवाद दिया, जिन्होंने इस परिस्थिति के निर्माण में अपना योगदान दिया।

भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि श्री जॉनसन की यह घोषणा वस्तुतः विश्व-मत की विजय है। उन्होंने कहा कि यह तथ्य हो सकता है कि यह घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति के आसन्न चुनाव को मद्देनजर रखकर की गयी हो तो भी इसका निश्चित महत्त्व है।

कांग्रेस-अध्यक्ष श्री निजलिंगप्पा ने आशा प्रकट की है कि श्री जॉनसन के इस निर्णय से सिर्फ विएतनाम में ही शान्ति का मार्ग नहीं खुलेगा, बल्कि सारे संसार में शान्ति की समझदारी बढ़ेगी।

स्वतंत्र पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री राजगोपालाचारी ने कहा कि श्री जॉनसन के इस निर्णय से विएतनाम की शान्तिवार्ता के वातावरण में सुधार होगा ऐसी सम्भावना उन्हें नहीं दीखती।

एसोसियेटेड प्रेस के वाशिंगटन स्थित संवाददाता ने समाचार भेजा है कि अमेरिका का रिपब्लिकन दल बम-वर्षा बन्द करने के राष्ट्रपति के निर्णय को एक चुनाव जिताने की दृष्टि से चली गयी चाल मानता है, जिसके द्वारा जॉनसन अपनी (डेमोक्रेटिक) पार्टी के प्रत्याशी श्री हरबर्ट हम्फ्री के चुनाव में जीतने की सम्भावना बढ़ाना चाहते हैं।

राष्ट्रपति-चुनाव के तीनों प्रत्याशियों १. डेमोक्रेटिक प्रत्याशी श्री हरबर्ट हम्फ्री, २. रिपब्लिकन प्रत्याशी श्री रिचर्ड निक्सन तथा ३. अन्य दलीय प्रत्याशी श्री जार्ज वैलेस ने जॉनसन की घोषणा का स्वागत किया।

श्री जॉनसन की घोषणा पर अपनी राय प्रकट करते हुए श्री हम्फ्री ने कहा कि श्री जॉनसन का यह निर्णय शान्ति-स्थापना में सहायक होगा। मैं इसकी पूरी तरह ताईद करता हूँ। जैसा कि राष्ट्रपति ने कहा है, उन्होंने यह निर्णय इस आशा से लिया है कि इसके द्वारा युद्ध का नर-संहार कम होगा और इससे शान्ति-स्थापना में मदद मिलेगी।

श्री जॉर्ज वैलेस ने कहा कि मैं आशापूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि राष्ट्रपति जॉनसन के निर्णय से दक्षिण पूर्व एशिया में शीघ्र सम्मानपूर्ण समझौते का रास्ता मिलेगा।

श्री निक्सन ने कहा कि 'मेरे इस कथन में मेरे दल के उपराष्ट्रपति पद के प्रत्याशी भी शामिल हैं—कि राष्ट्रपति के प्रत्याशी की हैसियत से मैं कोई ऐसी बात नहीं कहूँगा, जिससे शान्ति की सम्भावना को क्षति पहुँचे।

सिनेटर मेकार्थी ने कहा कि बम-वर्षा के बन्द होने से पेरिस शान्ति-वार्ता में मदद मिलेगी।

'स्टैट्समैन' (अंग्रेजी) ने बम-वर्षा की घोषणा को राष्ट्रपति जॉनसन की ओर से भेंट किया गया 'विदाई का बढ़ा उपहार' कहा है। अपने सम्पादकीय में 'स्टैट्समैन' ने लिखा है कि बम-वर्षा बन्द करने की घोषणा करने में एक मिनट की भी जल्दबाजी नहीं हुई है। यद्यपि अमेरिका के राष्ट्रपति के चुनाव का समय अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है, किन्तु बम-वर्षा के बन्द करने में जिस साहस और निर्णय को समझदारी दिखाई गयी है उसका अपना विशेष महत्त्व है। यह शान्ति नहीं है। यह युद्ध-विराम का समझौता भी नहीं है। राष्ट्रपति जॉनसन ने तो यह भी माना है कि सम्भवतः स्थल पर घमासान लड़ाई की शुरुआत हो सकती है। फिर भी उत्तर विएतनाम के विरुद्ध हवाई आक्रमण का यह स्थगन एक 'नयी उपलब्धि' है···अमेरिका के इस निर्णय के पीछे कोई ऐसी बात नहीं है, जो हनोई या उसके समर्थकों को बहुत खुश कर सके। इसके पीछे कोई शर्त नहीं है, लेकिन आशाएँ बहुत हैं। —रुद्रभान

www.vinoba.in

जॉनसन की भेंट

मानना पड़ेगा कि चलते-चलते जॉनसन ने दुनिया को एक अच्छी भेंट दी है। १ नवम्बर को जब उन्होंने घोषणा की कि उत्तरी विएतनाम की बमबारी बन्द रहेगी तो वर्षों की प्रतीक्षा के बाद दुनिया ने सुख की सांस ली।

विएतनाम पर जो लाखों टन बम गिरे—लगातार गिरते ही रहे—लेकिन एक छोटे-से देश का मनोबल नहीं तोड़ सके, वे बम अब नहीं गिरेंगे। बमों का गिरना बन्द होगा तो विएतनाम का जो प्रश्न अबतक के युद्ध से नहीं हल हो सका है, उसे अब पेरिस में सार्थक राजनीतिक चर्चा से हल करने की कोशिश की जायेगी। युद्ध से कब किस समस्या का हल निकला है? चर्चा तो ६ महीने से चल रही थी, लेकिन साथ-साथ युद्ध भी चल रहा था। जॉनसन की घोषणा से आशा हुई है कि अब सुव्यवस्थित संधि-वार्ता होगी, क्योंकि अब केवल अमेरिका और उत्तर विएतनाम की ही नहीं, बल्कि दक्षिण विएतनाम की सरकार तथा नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट के प्रतिनिधि भी रहेंगे। उम्मीद है चर्चा की राजनीति फिर इतनी गर्म नहीं होगी कि दुबारा युद्ध छिड़ जाय। यह जानी हुई बात है कि जब राजनीति गर्म होती है तो लड़ाई होती है, और जब शत्रुता पराकाष्ठा पर पहुँचती है तो संधि होती है। कौन नहीं मानेगा कि शत्रुता पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी है? अब बारी है संधि की।

बमबारी बन्द तो हुई है, लेकिन फिर शुरू कर देने की धमकी के साथ! ये धमकियाँ दुनिया की त्रस्त जनता, विशेष रूप से छोटे देशों की जनता, को याद दिलाती रहती हैं कि किस तरह उसकी शान्ति, और उसका सुख, कुछ थोड़े-से नेताओं-शासकों-योद्धाओं की मर्जी पर निर्भर है। १९४५ में अमेरिका के हाथ अणुबम आया। ४ साल बाद रूस अमेरिका का साथी बना। तब से, ऐसा लगता है, दुनिया इन दो महाशक्तियों के हाथ गिरवी रख दी गयी है। इनकी भौंहों पर दुनिया का भविष्य टिका हुआ है। हो सकता है कि छोटे देश अबतक इसीलिए बचे हुए हैं, क्योंकि रूस और अमेरिका दोनों के पास असीम संहार-शक्ति है। यह संहार-शक्ति दुनिया को खत्म करेगी, लेकिन बम फेंकनेवाले को छोड़ देगी, यह भरोसा दोनों में से किसीको नहीं है। शायद दोनों के बीच का भय यह संतुलन ही शेष दुनिया के लिए जीवन का आश्वासन है।

अणुशक्ति के कारण युद्ध में से विजय की गारंटी निकल गयी है। ऊपर-ऊपर से यही दिखाई देता है कि आज की दुनिया अमेरिका और रूस के प्रभाव-क्षेत्रों में बँटी हुई है। लगता है जैसे ये दोनों इन्द्र हैं और दूसरे देश इनके दरबारी हैं। लेकिन, अन्दर क्या दिखाई देता है? बम और डालर से लैस अमेरिका ने विएतनाम की कोई बरबादी उठा नहीं रखी, लेकिन विएतनाम को पराजित नहीं कर सका। रूस ने चेकोस्लोवाकिया को नीचा जरूर दिखाया, और उसे नागफांस में कसने की कोशिश भी कर रहा है, लेकिन उसके टैंक चेकोस्लोवाकिया की प्रतिकार-शक्ति को कुचल नहीं सके। फ्रांस, क्यूबा, विएतनाम का अमेरिका क्या बिगाड़ सका? और, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया, रुमानिया, क्यूबा और चीन का रूस ही क्या कर पा रहा है? दिखाई तो यह देता है कि आज भले ही अमेरिका और रूस के प्रभाव-क्षेत्र की बात कही जाती हो, लेकिन वह दिन संभवत: दूर नहीं है जब न उनका प्रभाव रह जायेगा, और न अपने देश के बाहर कोई प्रभाव-क्षेत्र! उन्हें लड़ना होगा तो लड़ेंगे जाकर चन्द्रलोक में! इस मृत्युलोक को तो युद्ध से मुक्त ही करना है!

शायद छोटे देशों के दिन आ रहे हैं। लेकिन उन्हें समझना चाहिए कि संकीर्ण राष्ट्रवाद में न सुख है, न शान्ति। राष्ट्रवाद के बाद साम्राज्यवाद के सिवाय दूसरा कुछ नहीं है। सुख और शान्ति सह-अस्तित्व और विश्व-परिवार भावना में है, न कि बड़े साम्राज्यवादियों के साथ छोटा साम्राज्यवादी कहलाने में।

कठिनाई यही है कि इस वक्त छोटे देशों में जो नेतृत्व है वह अपने देश और नयी दुनिया की नियति को नहीं पहचान रहा है। वह स्वयं पूँजीवादी-सैनिकवादी-राज्यवादी-विस्तारवादी है। और, इन देशों की भी जनता अभी इन मोहक नारों के जादू से निकल नहीं पायी है। सारे एशिया और अफ्रीका में स्वतंत्रता की जो छीछालेदर हुई है, और उपनिवेशवाद को 'विकास' का छद्मवेष बनाकर दुबारा घुसने का जो मौका मिलता जा रहा है उससे चिंता होती है कि ये नये देश अपने भविष्य को कभी पहचानेंगे भी या नहीं।

कुछ भी हो, अमेरिका कुछ भी चाहे, दक्षिण विएतनाम की सरकार कुछ भी कहे, वहाँ की जनता को आत्म-निर्णय का अधिकार तो मिलना ही चाहिए। आत्म-निर्णय आत्म-सम्मान की माँग है, और सह-अस्तित्व की पहली शर्त। दक्षिण विएतनाम साम्यवादी हो जायेगा, इसीलिए उसे आत्म-निर्णय से वंचित रखना है, और किसी-न-किसी रूप में अमेरिका को वहाँ बनाये रहना है, यह मानने लायक बात नहीं है। मानने ही नहीं, कहने लायक भी नहीं है। दक्षिण विएतनाम साम्यवाद की ओर न जाय, और चेकोस्लोवाकिया पूँजीवाद की ओर न जाय, यह ठीकेदारी अमेरिका और रूस को किसने सौंपी? जिस तरह दुनिया के अनेक देशों में प्रतिरक्षा और लोक-कल्याण के नाम में फासिस्टवाद और राज्यवाद पनप रहे हैं, उसी तरह विश्व-कल्याण और राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम में नये साम्राज्यवाद बढ़ रहे हैं। यह काम जनता का है कि वह कल्याण के इस नये नारे को समझे, और ठीकेदारों से मुक्ति का रास्ता निकाले।

अगर पेरिस में विएतनाम की समस्या का कोई हल निकल आता है तो हो सकता है कि अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों में नया मोड़ आये और मनुष्य की मुक्ति के कुछ नये रास्ते खुलें। •

मानव-देह की सार्थकता : जीवन-समर्पण

www.vinoba.in

इस सभा में इक्कीस साल से कम उम्र के जो लोग हैं, वे बड़े भाग्यवान हैं, इक्कीस साल के बाद शुरू होती है गधा-पचीसी ! 'यौवनम्'—जवानी।

यौवनं धनसम्पत्ति प्रभुत्वमविवेकता
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्

जवानी—धन—सम्पत्ति—सत्ता—अविवेक का होना, इनमें से एक-एक भी अनर्थ करता है।

इसलिए इक्कीस साल से कम उम्र के जो हैं, वे भाग्यवान हैं। वे जवान भी नहीं हैं, धन के मालिक भी नहीं हो सकते, विवेक भी छोटे बच्चों में अधिक होता है। जवानी आयी, मूंछें बढ़ गयीं, तो उसके साथ-साथ विवेक कम होता है। तो बहुत धन्य हैं आप लोग !

आप बालक हैं—'बालकः। बालः।' मतलब बलवान है। वह ऊँची आकांक्षा रख सकता है। उसको उम्मीद है। बड़ा होगा, वह बोझ से लदेगा, उसकी आकांक्षा मिट्टी में मिल जायेगी। ऊँची आकांक्षा बालकों को होती हैं। सनत् कुमार बचपन में ही ज्ञानी थे। ध्रुव बचपन में ही भगवान की खोज के लिए निकला। नचिकेता बाल था, बिलकुल यमराजके पास पहुँचकर ब्रह्मविद्या हासिल की। शंकराचार्य ने ८ साल की उम्र में संन्यास लिया। भारत भर घूमने निकले। नर्मदा के पास उनको गुरु मिले। उनके पास रहकर विद्या हासिल की। वहाँ से काशी आये और संस्कृत में भाष्य लिखा। तब उनकी उम्र थी १६ साल की। उनके बारे में एक कहानी है। उनको ८ साल की ही आयु थी। ८ साल में मृत्यु थी। उनको संन्यास लेना था। माता इजाजत नहीं दे रही थी। एक दिन नदी पर स्नान कर रहे थे, तो मगर ने पाँव पकड़ लिया। किनारे पर माँ खड़ी थी तब उन्होंने माँ से कहा—संन्यास लेने की अब तो इजाजत दो, नहीं तो मैं चला। माँ ने इजाजत दी, तो मगर ने पाँव छोड़ दिया। तब भगवान ने कहा, तुम्हारी आयु दुगुनी हो गयी। फिर विद्या हासिल कर १६ साल की उम्र में काशी में भाष्य लिखा और उसे भगवान को समर्पण करने बद्रीकेदार चले गये। तब भगवान ने उनसे कहा—तुमने बहुत बड़ा काम किया है। पर अब इसका प्रचार करना चाहिए। तो तेरी आयु और १६ साल बढ़ेगी, तुम इसका प्रचार करो।

आगे के १६ साल वे सारे भारत में घूमते रहे। कश्मीर में भी गये थे। श्रीनगर के नजदीक एक टीला है। उसका नाम ही शंकर टीला है। वहाँ के मुसलमान भी शंकर को याद करते हैं। फिर उधर गंगासागर तक गये थे। वहाँ सांख्यों का बड़ा गढ़ था। उनसे चर्चा, वाद किया। फिर वहाँ से गौहाटी गये। वहाँ कामाख्या के उपासक शाक्त लोग थे। उनसे चर्चा की। फिर शृंगेरी गये। और फिर आखिरी काम के लिए चले गये—समाधि के लिए—हिमालय। वहाँ मानसरोवर के नजदीक उनकी मृत्यु हुई। बेटा

विनोबा

पैदा हुआ केरल में और मृत्यु हुई मानसरोवर में, भारत की सीमा पर। सारा भारत दो दफा घूम लिया।

यह कहानी मैंने इसलिए सुनायी कि ऐसे जो होते हैं, वे तरुण होते हैं। तरुण यानी तारनेवाला। यह नहीं कि तरुण यानी डुबनेवाला। वासनायुक्त संसार में डूबनेवाला नहीं। काम-क्रोध से लिप्त, वासना से पीड़ित ऐसा नहीं। तारने की और तरने की आकांक्षा रखनेवाला तरुण है। ऐसे तरुण हुए शंकराचार्य। ३२ साल की उम्र में वे मरे। उनका नाम दुनिया में रोशन हो गया, क्योंकि उन्होंने जो भी किया अपने लिए नहीं किया, सारा परमात्मा की सेवा में समर्पण किया।

काम—क्रोध—मद—मोह—लोभ—मत्सर—ये मनुष्य के षड्रिपु हैं। इन सबसे हम अलग रहेंगे, ऐसा संकल्प करके, तुम लोगों में से—२५० में से २५ भी निकलें और संकल्प करें कि हम इन सारे विकारों से अलग रहेंगे और जीवन परमात्मा को समर्पण करेंगे, तो बेतिया में बाबा का आना सफल हुआ। चाहे ग्रामदान हो या न हो—अगर २५ तरुण तय करेंगे कि हम संसार-समुद्र में गोता नहीं लगायेंगे, परमात्मा की सेवा में जीवन देंगे—तो बाबा का काम सफल है। जो सत्य संकल्प करेगा, उसको भगवान मदद देता है। मनुष्य ऊँचा संकल्प करता ही नहीं ; लेकिन करता है तो भगवान मदद देता है।

खाना-पीना, संतति पैदा करना, यह तो जानवर का जन्म हुआ। अरे ! तुमने क्या यही किया जीवन में ? तो तुममें और जानवर में फरक क्या रहा रे ? हमारा तो मनुष्य का जीवन है। उसके लायक काम करें। भगवान ने मनुष्य कैसा पैदा किया, इसका वर्णन भागवत् में आता है। एक-एक वस्तु-प्राणी पैदा करता गया, देखता गया, लेकिन उसको संतोष नहीं हुआ। फिर उसने मनुष्य की आकृति बनायी—"ब्रह्मावलोकधिषणम् मुदमाप देवः"। ऐसी आकृति, जिसमें ब्रह्म साक्षात्कार के लायक सामर्थ्य है, और उसे देखकर 'मुदमाप देवः'—भगवान संतुष्ट हुए। क्या उसकी विशेषता थी ? "ब्रह्मावलोकधिषणम्"—ब्रह्मसाक्षात्कार का सामर्थ्य उसमें था।

यही उपनिषद् ने कहा है। प्रथम भगवान ने जानवर बनाये, फिर मनुष्य बनाया और बोले—"बहुत अच्छा बना, बहुत अच्छा बना।"

सभा के आरम्भ में किसीने हमसे सवाल पूछा था कि जीवनदान के मानी क्या ? हमने उसके मानी आपको बताये। जीवनदान यानी जीवन-समर्पण, भगवान के चरणों में अपना जीवन लगाना।

ज्ञानेश्वर महाराज महाराष्ट्र में सबसे श्रेष्ठ पुरुष हुए। और उन्होंने एक बहुत बड़ा ग्रन्थ, जो गीता पर भाष्य है और जिसका तर्जुमा हिन्दी में हो चुका है, लिखा है। उसमें अर्जुन-कृष्ण के संवाद का वर्णन किया है। योग कैसा होता है ? कैसे शक्ति बनती है, भगवान के पास मनुष्य कैसे पहुँचता है, इसका वर्णन। अन्त में अर्जुन कहता है—'हे भगवान ! अभी जो तुमने वर्णन किया, उसके सुनने में भी इतना आनन्द होता है, तो अगर हम वैसे बन जायेंगे, तो कितना आनन्द आयेगा !' आपको भी सुनने में आनन्द आया दीखता है, आप अगर वैसे बन जायेंगे तो कितना आनन्द आयेगा ! जीवनदान से बढ़कर बात हमने रखी—जीवन-समर्पण।

विद्यार्थियों से चर्चा,
बेतिया (चम्पारण, बिहार) ७-८-'६८

www.vinoba.in

सर्वोदय की क्रान्ति धरातल पर कब आयेगी ?

प्रश्न : विनोबा की ग्रामदान की कल्पना, विचार और सिद्धांत जितनी ऊँचाई पर हैं, ग्रामदानी गाँव उतने नीचे नहीं तो ऊँचे भी नहीं कहे जा सकते। विचार आचार के धरातल पर क्यों नहीं उतर रहा है ?

धीरेन्द्रभाई : विचार चाहे जितना ऊँचा हो, उस पर आरोहण के संकल्प के बाद जो जहाँ है, वहीं से उठना आरम्भ करता है। यह अत्यन्त स्वाभाविक है कि ग्रामदानी गाँव ग्राम-स्वराज्य के लक्ष्य की घोषणा के समय उसी स्थान पर रहेगा, जहाँ वह अब तक रहा है। ऐसे प्रसंग पर विचार और आचार की एकरूपता का प्रश्न नहीं उठ सकता है। जिस व्यक्ति ने विचारपूर्वक संकल्प किया, अगर उसे अकेला ही साधना में लगना है, तो भी उसकी साधना का प्रारम्भ सिद्धि पर से नहीं होगा।

इस संदर्भ में शुरू से ही विचार की दिशा में तीव्र कदम उठ सकता है, लेकिन जहाँ विचार का प्रतिपादन करनेवाला कोई ऋषि होता है और उस विचार को स्वीकार करनेवाली जनता होती है तो उसके लिए यह स्वाभाविक होता है कि स्वीकृति के बाद वह उस पर मनन करे, सोचे, समझे, अपनी परिस्थिति, मनःस्थिति तथा स्वभाव की स्थिति के अनुसार रास्ता खोजे, तब चलना शुरू करे। तब तक तो जनता जहाँ थी वहीं रहेगी। इतना ही नहीं, बल्कि हो सकता है कि रास्ता खोजने में भटककर कुछ देर के लिए और नीचे चली जाय। लेकिन चूँकि उसने विचार को सुना है, उसका ध्यान उधर आकर्षित हुआ है, और एक हद तक उसकी सम्मति भी है तथा पुरानी जड़ता छोड़कर रास्ता खोजने में भटककर नीचे भी उतरती है, तो भी अंततोगत्वा वह ऊपर को जायेगी। फिर अन्तिम आदर्श तक पहुँचने के लिए उसे निरन्तर आरोहण की प्रक्रिया अपनानी होगी।

प्रचलित मान्यता को बदलकर नयी मान्यता की स्वीकृति ही तो क्रान्ति है। अगर व्यापक पैमाने पर ग्राम, प्रखण्ड, और जिला तथा प्रदेशस्तर की जनता मालकियत के प्रश्न पर पुरानी मान्यता छोड़कर नयी मान्यता को स्वीकार कर दस्तखत करती है तो इसे आप जनक्रान्ति कहेंगे या संस्था क्रान्ति ? आप अगर गौर से देखेंगे, तो वस्तुस्थिति यह है कि क्रान्ति जनता में हो रही है, संस्थाओं में नहीं। संस्थाएँ तो पुरानी पद्धति छोड़ती नहीं हैं। गांधी, विनोबा के कहने पर भी वे पुरानी पद्धति से चिपकी हुई हैं। फिर संस्था में क्रान्ति कहाँ हो रही है ? अगर कहीं क्रान्ति हो रही है तो जनता में ही हो रही है, ऐसा समझना चाहिए।

इस प्रकार का प्रश्न इसलिए खड़ा होता है कि अभी लोकमानस में क्रान्ति की परम्परागत पद्धति ही बद्धमूल है। आमतौर से लोग क्रान्ति की क्रान्तिकारी प्रक्रिया को समझ नहीं पा रहे हैं, क्योंकि अब तक क्रान्ति के नाम से जो कुछ चला है उसमें जनक्रान्ति का तत्त्व नहीं रहा है। वे सब जमात-क्रान्ति रही हैं। कोई द्रष्टा पुरुष मानव-समाज के सामने क्रान्ति का विचार रखता है, उस विचार से उद्बुद्ध तथा उस पर निष्ठा रखनेवालों की एक विशिष्ट क्रान्तिकारी जमात बनती है और वह क्रान्ति करती है। जनता उस जमात को देखती है, उसकी निष्ठा, तेजस्विता तथा संगठन के प्रति श्रद्धावान होती है और अपनी कष्टमुक्ति के लिए उसे जब तक योग्य 'एजेन्सी' मानती है, तब तक वह उसका साथ देती है। इस प्रक्रिया में जनता की प्रेरणा के लिए रंजक तथा मंगलकारी राजा होते तो जनता केवल लोकतंत्र या समाजवाद के विचार-शक्ति की प्रेरणा से क्रान्ति के लिए उमड़ती।

उपरोक्त प्रक्रिया में दोष होता है कि जनता क्रान्ति-विचार को छोड़कर क्रान्ति के वाहक को देखती है। अगर वह मजबूत है तो विचार चाहे जो हो, वह उसके पीछे चल देती है। फलस्वरूप क्रान्ति की सफलता जनता के कब्जे में न आकर जिस वाहक के जरिये उन्होंने क्रान्ति की थी, उसके कब्जे में चली जाती है, और वाहक जनता पर सत्ता की फौजी ताकत से विचार को लाद देता है— उसकी मान्यता के खिलाफ भी। तब फिर वह जनक्रान्ति में परिणत न होकर, केवल परिस्थिति-परिवर्तन के लिए सत्ता-परिवर्तन मात्र होता है। यानी सत्ता विचार के माननेवालों की जमात के हाथ में चली जाती है। लेकिन विनोबा जन-क्रान्ति करना चाहते हैं। **जनक्रांति के लिए विशिष्ट क्रान्तिकारी जमात एक बाधक तत्त्व है, ऐसा समझना चाहिए। क्योंकि वैसी स्थिति में जनता का ध्यान क्रान्तितत्त्व से हटकर क्रान्ति के वाहक व्यक्ति और जमात की शक्ति पर चला जाता है। जनता उसी के भरोसे अपने को सौंप देती है।** इसलिए विनोबाजी अपनी क्रान्ति के लिए विशिष्ट जमात नहीं बनाते। वे पूरे समाज में विचार का अनुप्रवेश कराना चाहते हैं, ताकि विचार-शक्ति ही क्रान्ति का साधन बने, कोई दल या संस्था नहीं।

यही कारण है कि विनोबा पूरे समाज को क्रान्ति के लिए आह्वान करते हैं। वे खादी में काम करनेवालों को भिन्न-भिन्न पार्टी के सदस्यों को, पंचायत के सदस्यों और शिक्षकों, सचेतन किसान और मजदूरों को क्रांति का संदेश पहुँचाने के लिए आह्वान करते हैं। अर्थात् वे पूरे समाज के समस्त सचेतन तत्त्वों

प्रश्न : अभी यह आन्दोलन लोक आन्दोलन नहीं बन पाया है, वह संस्थाओं के कार्यकर्ताओं पर आधारित है। मगर कार्यकर्ताओं के अपने जीवन में क्रान्ति नहीं है। वे उन्हीं पुराने मूल्यों से चिपके हुए हैं जिन्हें हम समाज में बदलना चाहते हैं। बदलें किसे, पहले अपने को या समाज को ?

धीरेन्द्रभाई : यहीं पर क्रान्ति की सही प्रक्रिया पर विचार करने की आवश्यकता होती है। आपने पूछा है कि जनक्रान्ति क्यों नहीं होती है ? आखिर आप क्रान्ति किसे कहते हैं ? विचार-शक्ति उतना काम नहीं करती है जितना जमात-शक्ति पर आस्था और वर्तमान संकटमय परिस्थिति से मुक्ति की चाह। अगर फ्रांस, इंग्लैंड के राजा या रूस के जार प्रजा-

www.Vinoba.in

को अपना वाहन बनाना चाहते हैं, ताकि उनके मार्फत अचेतन तत्त्व में भी क्रान्ति की चेतना पैदा हो। वस्तुतः आप जिसे जन-क्रान्ति समझते हैं वह जनता के सहयोग से संस्थाक्रान्ति है। चूँकि जमात की विशिष्ट हलचलों के कारण वह ऊपर-ऊपर दिखाई देती है, इसीलिए आप उससे प्रभावित होते हैं। सामान्य रूप से 'हमले' की प्रक्रिया अनुप्रवेश की प्रक्रिया से अधिक नाटकीय होती है, जिसका अभाव आप इस क्रान्ति में देख रहे हैं।

मैंने अभी कहा है कि इस क्रान्ति में कोई किसीको बदलने के लिए नहीं जाता है, बल्कि पूरा समाज-क्रान्ति का संकल्प करता है। चूँकि कार्यकर्ता भी जनता का अंग है, इसलिए वह भी क्रान्ति का पात्र है, न कि घटक। जब पूरे समाज में क्रान्ति की आवश्यकता है तो जिसे आप कार्यकर्ता कहते हैं, उसमें भी क्रान्ति की आवश्यकता है, क्योंकि वे भी वर्तमान व्यवस्था और मान्यताओं के शिकार हैं। हो सकता है कि उनमें कुछ व्यक्ति आरोहण की प्रक्रिया में कुछ आगे हैं, और दूसरे पीछे हैं, जैसे जनता में भी कुछ आगे और कुछ पीछे हैं।

विनोबा की एक आम टीका यह है कि वे रूढ़िग्रस्त, प्रतिक्रियावादी या भ्रष्टाचारी व्यक्तियों के मार्फत क्रान्ति का सन्देश पहुँचाने का प्रयास करते हैं। लेकिन स्पष्ट रूप से यह समझना चाहिए, कि जो क्रान्तिद्रष्टा निष्ठावान क्रान्तिकारियों की जमात नहीं बनाना चाहता है, उसके लिए यह अनिवार्य है कि वह जनता के हर व्यक्ति को क्रान्ति का योग्य वाहक माने, क्योंकि हर व्यक्ति के अन्दर क्रान्ति-गुणों का अंकुर मौजूद है, यह निष्ठा उसकी रहती है। नहीं तो पूरी जनता में क्रान्ति विचार के अधिष्ठान की सम्भावना पर आस्था वह खो देगा। यह भी स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि सर्वोदय की क्रान्ति सर्व के लिए और सर्व द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है। सर्व के बाहर आप किसीको रख नहीं सकते हैं।

प्रश्न : समझबूझकर या जैसे भी हो, अनेक जिलों के लोगों ने ग्रामदान पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। क्या ये ग्रामदान मात्र कागज पर ही रह जायेंगे? कबतक लोकशक्ति प्रकट होने की राह देखें?

धीरेन्द्रभाई : अभी हमने बताया है कि कागज पर दस्तखत यद्यपि लोकशक्ति नहीं है, फिर भी वह लोकसम्मति है। सम्मति के अमल में ही शक्ति प्रकट होती है, लेकिन प्रथम चरण में सम्मति की आवश्यकता तो होती ही है। अब प्रश्न यह है कि सम्मति का अमल कब होगा? वस्तुतः अमल तब होगा जब लोक-मानस में विचार स्पष्ट होगा। कागज पर दस्तखत करने से इतना अवश्य हुआ है कि अब व्यापक रूप से विचार के लिए जिज्ञासा का सन्दर्भ निर्माण हुआ है। यही जिज्ञासा विचार के स्पष्टीकरण का प्रारम्भ-बिन्दु है, इसलिए विनोबाजी लोकयात्रा द्वारा लोकशिक्षण पर इतना अधिक जोर दे रहे हैं। जबतक यह नहीं होता है तबतक तो आपको इन्तजार करना ही होगा। आप चाहेंगे, कोई व्यक्ति या दल कुछ जादू कर देगा, उसका स्थान इस क्रान्ति में नहीं है। लेकिन एक बात समझ लेनी चाहिए, कि जिस किसीको क्रान्ति की चाह है, वह अगर राह ही देखता रहेगा तो वह अपने को और क्रान्ति को धोखा देगा, चूँकि आप ही के शब्दों में अगर जनक्रान्ति इष्ट है तो जन के नाते क्रान्ति में लग जाना चाहिए, न कि किसी नेता या संस्था, जो जन से ऊपर अधिष्ठित रहता है, उसकी राह देखें। •

वियतनाम में बमवर्षा : द्वितीय विश्वयुद्ध से भी अधिक

अमेरिका के प्रतिरक्षा विभाग ने वियतनाम में अब तक हुई बमवर्षा-सम्बन्धी जो आँकड़े प्रकाशित किये हैं उनसे ज्ञात होता है कि १९६५ से १९६८ के जुलाई महीने तक २५ लाख टन से अधिक वजन के बम वियतनाम की भूमि पर बरसाये गये जब कि द्वितीय महायुद्ध में कुल मिलाकर २१ लाख टन से कम ही वजन के बम गिराये गये थे। कोरिया के युद्ध में ६ लाख ३५ हजार टन बम इस्तेमाल किये गये थे।

सैनिक विमानों की क्षति के सम्बन्ध में विज्ञप्ति में बताया गया है कि ४ अगस्त १९६४ से ८ अक्तूबर, १९६८ की अवधि में कुल मिलाकर ९१५ अमेरिकी वायुयान और हेलिकॉप्टर वियतनाम के युद्ध में मार गिराये गये। इसके पहले १९६१ से १९६४ के दौरान लगभग ४०० वायुयान और हेलिकॉप्टर मार गिराये जा चुके थे।

वियतनाम पर अमेरिकी बमवर्षा बन्द होने की क्रमिक तिथियाँ—

७ फरवरी, १९६५—वियतनाम पर अमेरिकी बमवर्षा का प्रारम्भ।

१३ मई से १७ मई, १९६५—इस बीच इस आशा से बमवर्षा बन्द की गयी थी कि उत्तर वियतनाम अपनी ओर से इस प्रकार का कोई जवाबी कदम उठायेगा।

२४ से २५ दिसम्बर, १९६६—क्रिसमस के उपलक्ष में अल्पकालिक द्वितीय समझौता।

३१ दिसम्बर, १९६६ और १ जनवरी, १९६७—नये वर्ष के आगमन के उपलक्ष में द्विपक्षीय समझौता।

८ फरवरी से १७ फरवरी, १९६७—वियतनाम के नव वर्ष के उपलक्ष में।

२३ मई, १९६७—बुद्ध-जन्म-दिवस के उपलक्ष में।

२५ दिसम्बर, १९६७—क्रिसमस द्विपक्षीय समझौते के उपलक्ष में।

३१ दिसम्बर, १९६७—नव वर्ष के उपलक्ष में।

१० जनवरी, १९६८—वियतनाम के राष्ट्रीय उत्सव के उपलक्ष में ३६ घंटे तक बमवर्षा बन्द करने की घोषणा हुई, किन्तु उसके बाद ही दक्षिण वियतनाम के नगरों पर वियतकांग की आक्रामक कार्रवाइयों के बढ़ने के कारण बमवर्षा पुनः प्रारम्भ कर दी गयी।

३१ मार्च, १९६८—राष्ट्रपति जॉनसन ने घोषणा की कि २० अक्षांश के उत्तर पड़नेवाले वियतनामी इलाकों पर बमवर्षा नहीं की जायेगी। इस घोषणा के बाद पेरिस शान्ति-वार्ता का शुभारम्भ हुआ।

७ अप्रैल, १९६८—अमेरिकी सैनिकों और सैगॉन के सैनिकों को आदेश दिया गया कि वे १९ अक्षांश से उत्तर के क्षेत्र पर कदापि बमवर्षा न करें।

www.vinoba.in

यह है हमारी संस्कृति !

[विनोबा द्वारा प्रेरित महिला लोकयात्री दल मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश की यात्राएँ पूरी कर अब हरियाणा पहुँच गया है। एक साल से ऊपर हो रहे हैं इस यात्रा के शुरू हुए। इस बीच अनुभवों की विविधता ने यात्रा को और भी आकर्षक बना दिया है। कुछ अंश पाठकों के लिए प्रस्तुत है।—सं०]

•उस दिन बाइदेउ ने कहा, "यह परिवार इस भाई का साथ पसन्द नहीं करता।" मथुरा पहुँचे तो भोला भाई को देखकर आश्चर्य हुआ और अच्छा लगा। वह हमें एक गाँव में मिला था और दूसरे दिन भी हमारे साथ रहा था, अपने गाँव में जाते समय कह गया था कि अब जाकर यही काम करूँगा। फिर उसने अपनी समस्याएँ बतायी थीं। पिछले कई वर्षों से उसने गाँव की सड़क के पास दूकान खोली थी, जहाँ अब सड़क बननेवाली है। और, इसलिए सरकार दूकान उठाने को कह रही है। फिर कहने लगा कि आज तक मैंने बहुत काम किये, खूब दुःख देखे, पर कोई साथ देता नहीं। घर की भी कई परेशानियाँ थीं, जिन्हें छोड़कर वह आ गया, तो हमें लगा कि ऐसे व्यक्ति ही समाज में काम करते हैं। जिन पर बोझ है वही नया बोझ उठाते हैं। इस राह में केवल दिल का खजाना चाहिए। करुणा आ गयी तो "एक हि साधे सब सधे" वाली बात होगी। ये सब बातें ध्यान में आ गयीं और लगा कि शहरवाले यह जानते नहीं कि उनके ऐशआराम की सब चीजें किसान के खून से सनी हैं। बेजबान लोगों की अव्यक्त तपस्या से देश जिन्दा है। उनका नाम बड़े-बड़े कलाकारों, साहित्यकारों में, महान् पुरुषों में नहीं मिलेगा, लेकिन उनके ही बल पर दुनिया चल रही है। हमें ध्यान में आया कि किस तरह फ्रांस में खूनी क्रान्ति हुई और एक-एक करके बुर्जुआ गिलोटिन पर चढ़ाये गये। यह तो हमारे देश की संस्कृति है जो यहाँ के लोग अकाल पड़ने पर भी मर जाते हैं, कहते कुछ नहीं। अन्य साथियों ने भी तुच्छ भाव से कहा, "बहिनजी, अब इसें अपने मुँह न लगाओ।" टोली में चिन्तन का प्रवाह चला—ऐसा क्यों होता है? पढ़े-लिखे और अनपढ़ के व्यवहार में अन्तर क्यों आता है? एक को हम पास बैठा लेते हैं, दूसरे को नहीं; एक को हम कुछ भी कार्य बेहिचक कहते हैं, दूसरे को सँभलकर। जो आज के सामाजिक मूल्यों के अनुसार प्रतिष्ठित हैं, उनकी प्रतिष्ठा यात्रा में आने से बढ़ती है। जिसकी नहीं है, उसकी तरफ ध्यान ही नहीं। जो मेहनत का आदी है उससे अधिक मेहनत करवायी जाती है। जिसने श्रम की बूँदों से अपने भाग्य को नहीं सींचा, उसकी कमजोरियों को संरक्षण मिलता है। आखिर उस भोले भाई को यहाँ से जाना पड़ा।

•एक दिन गाँव में प्रवेश करते ही पता चला कि यहाँ की स्त्रियाँ परिवार-नियोजन से इतनी भयभीत हैं कि सभा में जाती ही नहीं। उन्हें लगता है कि ये भी वे ही लोग हैं जो झूठ बोलकर हमें बुलवा रही हैं, और फिर जबरदस्ती खानापूर्ति करेंगी। इतिहास की तानाशाही से यह बात किस प्रकार कम कही जा सकती है? इसके बाद तो इन्हीं बातों का तांता लग गया। देहली की एक बहिन से हमने पूछा, 'आपकी खानापूर्ति हो रही है कि नहीं?' कहने लगीं 'बहिनजी, हम क्या करें? हम तो परेशान हैं। मेरे पति ने मुझे छोड़ दिया है और सरकार नौकरी छोड़ा देने का भय दिखाती है। गाँववाले सुनते नहीं।' हमने कहा कि यह भारतीय सभ्यता है कि फिर भी आपको अपने घर में रहने दिया। एक बहिन ने बताया, 'अब इतनी महँगाई में हमारे वेतन में से यदि काटा जायेगा तो हम कैसे गुजर करेंगे?' एक भाई कहने लगे, 'हम तो सरकार के परिवार-नियोजन में वैसे ही मदद देते हैं, क्योंकि हम ब्रह्मकुमारी समाज में विवाह नहीं होने देते। जो विवाहित हैं उन्हें संयम से रहने को कहते हैं।' हमने पूछा, 'आप परिवार-नियोजनवाले कृत्रिम साधन तो बताते हैं न?' उन्होंने कहा, 'बिलकुल नहीं। इसमें दो प्रकार के दोष हैं। पहला, सरकार को धोखा देना, दूसरा, डरपोक बनना, जो बात सही समझें उसका प्रतिकार न करना।' अन्त में वह यह कहकर चला गया कि नौकरी छोड़ना चाहता हूँ। जीवन से स्वाभाविकता तो जैसे रूठकर चली गयी है। इस कृत्रिमता के विरुद्ध आवाज उठाने की शक्ति क्यों नहीं है? कितने बँधे हुए हैं लोग अपने ही बँधनों से? सोने-लोहे की बेड़ियाँ इसके आगे क्या चीज हैं!

•मथुरा में हरिजनों के बीच सभा के पूर्व कुछ नवयुवकों से बात चल रही थी। एक जवान ने कहा, 'आखिर यदि हम हिन्दू होते तो क्या ये हमें इतना दूर कर देते? भगवान् के दर्शन भी करने नहीं देते। कोई अपनों से भी इस तरह का व्यवहार करता है!' बातें करते-करते स्कूल-कालेज की भी चर्चा आ गयी। नौजवान कहने लगे, 'आज भी हमारे साथ इन शैक्षणिक संस्थाओं में भेद किया जाता है।' कभी-कभी मार-पीट भी हो जाती है। नौजवान का खून खौल रहा है। उसके अंतिम उद्गार थे, 'हमें ऐसे धर्म के साथ क्या करना है, हम सोच रहे हैं। युग की पुकार हमें सचेत कर रही है।' सभा में एक बुजुर्ग ने कहा कि आप हमें तो सिखाते हैं, पर जरा इन शहरवालों को भी तो सिखाओ। शहर का एक छोटा-सा बच्चा चिल्लाकर हुकुम देता है, 'ऐ भंगी! जरा इधर आओ, हमारे यहाँ सफाई करके जाओ।' हम सफाई से रहते हैं तो चर्चा चलने लगती है, 'इनको तो देखो ये कैसे रहने लगे हैं!' हमारे घर का एक-एक व्यक्ति काम करता है। पाई-पाई इकट्ठा करके कुछ लोगों ने अच्छे मकान बनवा लिये हैं। तो लोग कहते हैं कि ये कहाँ से लूट लाये हैं, जो ऐसे मकान बन गये हैं। पेग-पेग पर ताने सुनने को मिलते हैं, अपमानित होना पड़ता है। हमारा यह कलंक कब धुलेगा? हम स्वयं नहीं गिरे हैं और न हम स्वयं उठ सकते हैं। हमें सवर्णों ने गिराया है। वे ही ऊपर उठा सकते हैं।

•यात्रा में ऐसी अनेक वृद्ध महिलाएँ मिलीं, जिन्होंने यात्रा में आने की तीव्रता प्रकट की। उनके मन की स्फूर्ति देखकर हमारा उत्साह बढ़ता है। उन्होंने शायद स्फूर्ति के ही स्रोत को पाया है। अतः आजीवन कार्य करते हुए भी उनका बुढ़ापे में उत्साह क्षीण नहीं हुआ है।—देवी रीझवानी

औरंगाबाद, हरियाणा, २३-१०-६८

हाथल की ग्रामसभा : कार्यपद्धति और वैचारिक परिवर्तन का एक अध्ययन

[कुमारप्पा ग्रामस्वराज्य शोध संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर की ओर से किया गया यह अध्ययन उन शंकाओं का निराकरण प्रस्तुत करता है, जिसमें यह कहा जाता है कि गाँव के अनपढ़ और गँवार लोग अपनी समस्याओं को खुद कैसे हल कर सकेंगे ? आज के तनाव और द्वन्द्वपूर्ण वातावरण में सर्वसम्मति या सर्वानुमति कोरी कल्पना है ।—सं०]

(१)

आबू पर्वत की तलहटी में बसा हाथल गाँव अपने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के कारण सबका ध्यान अपनी ओर खींचता है। गाँव के अध्ययन के बाद सहज ही भारत की प्राचीन ग्राम-व्यवस्था की ओर ध्यान जाता है। वैसे यह गाँव भी पुराना है। करीब ६०० वर्ष पूर्व यहाँ ब्राह्मण लोग आकर बसे थे। आज इस गाँव की जैसी व्यवस्था है उसका ऐतिहासिक संदर्भ है। परन्तु ग्रामदान के बाद इस गाँव ने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में एक नया मोड़ लिया है। २८ दिसम्बर १९६१ को इस गाँव के निवासियों ने ग्रामदान की घोषणा की और उसी दिन ग्रामसभा की स्थापना कर सर्वसम्मति से ग्रामदान की निम्नलिखित शर्तों को व्यावहारिक रूप देने का संकल्प किया। (१) गाँव के भूमिहीनों एवं कम जमीन जोतनेवालों को पर्याप्त जमीन देंगे। (२) हम अपनी जमीन पर, हमारा जो स्वामित्व है वह गाँव की ग्रामसभा को देंगे, इस प्रकार जमीन पर हमारे और हमारे उत्तराधिकारियों के अधिकार बरकरार रहेंगे। (परन्तु यदि वह जमीन नहीं जोत सकते हैं तो जमीन दूसरे को जोतने हेतु दे दी जायगी।) (३) ग्रामीण स्रोतों से ग्रामकोष की स्थापना करेंगे। (४) गाँव के सभी बालिग ग्रामसभा बनायेंगे; ग्रामसभा गाँव के सभी लोगों की भलाई के लिए सर्वसम्मति अथवा सर्वानुमति से काम करेगी।

हमारा यह अध्ययन ग्रामदान की चौथी शर्त ग्रामसभा का संगठन और संचालन को समझने की दृष्टि से खास तौर पर किया गया। ग्रामदान के बाद गाँव की सामाजिक, आर्थिक-जीवन में ग्रामसभा का सर्वप्रमुख स्थान हो जाता है। असल में गाँव के जीवन को एक दिशा देनेवाली और संचालन की धुरी ग्रामसभा है।

ग्रामदान के बाद संगठन और निर्माण की दृष्टि से ग्रामसभा की कार्यपद्धति और प्रक्रिया के साथ नित्यप्रति कार्यवाहियों का भी व्यावहारिक महत्त्व हो जाता है। ग्रामदान के बाद अक्सर प्रश्न उठता है कि ग्रामसभा को कौन-कौनसे काम करने चाहिए, उसके क्या अधिकार हों, काम का क्या ढंग हो, निर्णय की पद्धति क्या हो, आदि। हाथल में जो भी प्रयास इस दिशा में किये गये हैं उसे उसी रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास हम यहाँ करेंगे। अतः क्या नहीं किया गया या सिद्धान्ततः यह किया जाना चाहिए था इस पर हम यहाँ विचार नहीं करेंगे। हम यहाँ पहले ही निवेदन करना चाहते हैं कि ग्रामसभा ने अपनी आवश्यकता, अपनी शक्ति को देखते हुए जो समझ में आया और जैसा वातावरण बना वैसा निर्णय किया, कार्य किया। यहाँ की ग्रामसभा में बाहर के किसी कार्यकर्ता का कोई हस्तक्षेप नहीं देखने को मिला।

संक्षेप में अध्ययन की पद्धति के बारे में भी विचार कर लेना चाहिए। हमने अध्ययन

अवध प्रसाद

की सुविधा की दृष्टि से इन साधनों का उपयोग किया—(१) व्यक्तिगत प्रश्नावली, (२) सार्वजनिक प्रश्नावली—ग्रामसभा की कार्यवाही हेतु, (३) पारिवारिक चर्चा, (४) सामूहिक चर्चा, (५) विशिष्ट वर्ग से खास चर्चा। इस प्रकार हमने गाँव की कुल आबादी के १० प्रतिशत लोगों से चर्चा की। परन्तु व्यक्तिगत और खास मत एवं ग्रामदान की प्रक्रिया को जानने की दृष्टि से गाँव के ३० लोगों से व्यक्तिगत प्रश्नावली द्वारा तथ्य संकलन किया।

(२)

इसके पहले कि ग्रामसभा के कार्यों एवं ग्रामदान के प्रति लोगों के रुख पर विचार करें, हम ग्रामसभा की कार्य-पद्धति पर संक्षेप में विचार करना चाहेंगे। ग्रामसभा में किन लोगों का प्रमुख स्थान रहता है, निर्णय में किसका प्रमुख स्थान रहता है और निर्णय की प्रक्रिया क्या होती है ? इस सम्बन्ध में पूछे गये प्रश्नों के निम्नलिखित उत्तर मिले :—

साक्षात्कार संख्या–३०

वक्तव्य	संख्या
१—सबकी सम्मति से कोई भी निर्णय होता है।	२८
२—अध्यक्ष, मंत्री एवं ग्रामसभा के सक्रिय सदस्य विशेष रुचि रखते हैं।	२९
३—अध्यक्ष का विशेष मार्गदर्शन होता है।	३०
४—हमलोग सभा में खुलकर हिस्सा बँटाते हैं, हमारी बात भी मानी जाती है। ★	१०
५—निर्णय सर्वानुमति से होता है।	२७
६—मतभेद की स्थिति में प्रस्ताव अगली बैठक के लिए छोड़ते हैं।	२५
७—हरिजन एवं अन्य पिछड़ी जाति के लोग अगुआ के रूप में नहीं भाग लेते हैं।	२०
८—गैरब्राह्मण लोग ब्राह्मणों के निर्णय पर विश्वास करते हैं।	१८
९—सामान्यता निर्णय सर्वसम्मति की स्थिति में आ जाता है।	२६
१०—मतभेदों का निपटारा खुली चर्चा में होता है।	२५

उपरोक्त तथ्य प्रश्नावली के गणितीय शब्दों में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त १२ से अधिक लोगों से चलते-फिरते एवं सामूहिक मंडली में मत जानने का प्रयास किया। साफ जाहिर है कि यहाँ ब्राह्मण वर्ग की प्रमुखता है, साथ-ही-साथ अन्य जातियाँ —जो कि पिछड़ी हैं—उन पर पूरा विश्वास करती हैं। पर हम यह नहीं स्वीकार करना चाहेंगे कि इसमें उनका शोषण होता है। इसकी पुष्टि आगे के प्रश्नोत्तर से हो जायेगा। हरिजन सामान्यतया अनपढ़ या मात्र साक्षर हैं। उन्हें मजदूर इसलिए नहीं कहना चाहेंगे

★ केवल हरिजनों से पूछा गया (संख्या १५)

कि यहाँ मजदूरी ब्राह्मण भी उसी प्रकार करते हैं, जैसे हरिजन। ब्राह्मण स्त्री-पुरुष भी खाली समय में यदि जरूरत हुई तो मजदूरी करते हैं। गाँव के सबसे प्रतिष्ठित लोगों ने बताया कि हमारे घर की स्त्रियाँ खेत में काम करने गयी हुई हैं। हाँ, शिक्षा के क्षेत्र में ब्राह्मण प्रारम्भ से आगे हैं। अन्य जाति के लोग खेती के अलावा अपना परम्परागत पेशा भी करते हैं। ग्रामसभा के निर्णय में सबकी सहमति आवश्यक होती है। निर्णय में ग्रामसभा के अध्यक्ष एवं अन्य बुजुर्गों का सर्वप्रमुख स्थान रहता है, यह अधिकांश लोगों की उक्ति रही। स्मरण रहे कि ग्रामसभा के अध्यक्ष श्री गोकुल भाई भट्ट हैं और उनका पूरा प्रभाव है, साथ-ही-साथ उनका आवश्यक समय भी ग्रामसभा को मिलता है।

जहाँ तक गाँव में नेता का प्रश्न है, एक रुचिकर बात देखने को मिली। नेता कौन बने, इसके उत्तर में एक से अधिक लोगों से यह सुनने को मिला कि 'जो काम में रुचि लेता है, वह काम करता है।' यदि कई लोग रुचि लें तो ? इस प्रश्न के उत्तर में यह सुनने को मिला कि 'अभी चुनाव का दंगल हमारे यहाँ नहीं होता है।' यहाँ एक बात यह देखने में आयी जो कि विशेष उल्लेखनीय है। गाँव में जितने भी ग्रामसभा के सक्रिय सदस्य हैं वे सब-के-सब ४५ वर्ष के ऊपर के हैं। अर्थात् गाँव बुजुर्गों के हाथ में है। इसका एक कारण यह है कि अधिकांश युवक बाहर नौकरी करते हैं या पढ़ते हैं। फिर भी सर्वेक्षण से जाहिर हुआ कि गाँव के बाहर रहनेवाले लोग वर्ष में दो माह गाँव में रहते हैं और सभी कार्यों में सक्रिय सहयोग देते हैं। काम नियमित चले इस कारण ग्रामसभा के पदाधिकारी स्थायी रहनेवालों को ही बनाया गया है।

ग्रामसभा की बैठक में निर्णय मुख्यतया सर्वसम्मति से होता है, किसी-किसी मामले में सर्वानुमति की स्थिति आती है। अबतक की कार्यवाहियों को देखने से स्पष्ट होता है कि बहुमत की नौबत नहीं आयी। हाँ, प्रस्ताव को स्थगित करने की नौबत आयी है। सर्वेक्षण के बाद यह साफ जाहिर हुआ कि ग्रामसभा अपने निर्णय निम्नलिखित प्रक्रिया से करती है :—

१—ग्रामसभा की बैठक में प्रस्ताव पर खुली चर्चा और सर्वसम्मति से निर्णय।

२—अध्यक्ष एवं सक्रिय सदस्यों का मार्ग-दर्शन।

३—प्रस्ताव में थोड़ा मतभेद होने पर सर्वानुमति।

४—किसी खास प्रस्ताव के लिए समिति का गठन करके।

५—महत्त्व के प्रश्न पर मतभेद होने पर उन्मुक्त चर्चा के लिए कुछ समय देकर।

(क्रमशः)

पंजाब और उत्तर प्रदेश में कुष्ठ-सेवा-कार्य : सही दिशा, अनुभव और जानकारी

राष्ट्रीय कुष्ठ संगठन (एन० एल० ओ०) वर्धा के सुझाव पर मुझे १६ अगस्त से २० सितम्बर के बीच पंजाब और उत्तर प्रदेश की कुष्ठ-सेवी संस्थाओं के देखने का अवसर मिला। यात्रा के दौरान जो जानकारी मिली और अनुभव आया वह नीचे प्रस्तुत है :—

कुष्ठ-सेवा-कार्य विभिन्न प्रकार के सेवा-कार्यों में एक विशिष्ट और ईश्वर के नजदीक पहुँचने का सर्वोत्तम सेवा-कार्य है। इसके माध्यम से तिरस्कृत, बहिष्कृत, अपमानित और दुःखी लोगों के साथ नाता जोड़ा जा सकता है। हजारों-लाखों कुष्ठ-रोगी तरसते रहते हैं कि उनका भी कुशल-क्षेम पूछनेवाला कोई हो, उनके सामने साहस और स्नेह से खड़ा होनेवाला कोई हो, जो उनसे इतना मात्र पूछ ले कि "क्यों भाई, कहो, तुम्हारा क्या हाल है ?" आज उनसे बात करना, कुशल-क्षेम पूछना तो दूर की बात है लोग उन्हें अपनी आँखों से देखना भी पसन्द नहीं करते। इसीलिए जगह-जगह कई महानुभाव इस प्रयास में लगे हैं कि कुष्ठ-रोगियों को सार्वजनिक स्थानों, तीर्थ स्थानों से हटाकर चहारदीवारी के भीतर कैद कर दिया जाय, ताकि जब लोग घूमने-फिरने, सैर-सपाटे अथवा देव-दर्शन, पूजा आदि के लिए बाहर निकलें तो वे विद्रूप, कुरूप, दुःखी और बिलखते-रोते लोग उनकी नजरों के सामने न पड़ें।

कुष्ठ-समस्या का अन्तरदर्शन

आज का भिखारी कुष्ठ-रोगी भिखारी बनने या दर-दर भटकने से पहले एक अच्छे खासे अंगोंवाला सौन्दर्य तथा अनेक गुणों से सम्पन्न मानव रहा है। लेकिन आज वह इस हालत में पहुँचा है कि लोग उसे देखना तक कबूल नहीं करते। आरम्भ में जब उसे इस रोग की जानकारी हुई तब उसके मन ने यह स्वीकार ही नहीं किया कि उसे कोढ़ हुआ है। इस प्रकार अनिश्चितता की दशा में उसने कई साल गुजार दिये। जब रोग बढ़ते-बढ़ते इस दशा में पहुँच गया कि छिपाना संभव नहीं रहा तो घर के लोगों, सगे-सम्बन्धियों ने भी उससे नाता-रिश्ता तोड़ दिया। घर से निकाल दिया। तब वह दर-दर का भिखारी बनने को विवश हुआ। अब वही मुख्य रूप से तीर्थ-स्थानों में अपने टाट को बिछाकर बैठा है और टिन के कटोरे या रंग के डिब्बों में कुछ खड़खड़ाता हुआ भीख माँगता फिरता है। वह सिर्फ इसलिए जीता रहता है कि मर नहीं पाता।

छिपे रोगी : मुख्य समस्या

समाज के दानी-धर्मी लोग, जिन्हें प्रत्यक्ष दान-धरम करना होता है वे भिखारी लोगों को ढूँढ़कर दान करते और दान करने का संतोष प्राप्त करते हैं। इस प्रकार से सीधे दान द्वारा लाखों भिखारी कुष्ठ-रोगियों का पालन हो रहा है। जो सरकार के लिए भयंकर समस्या होती उसे आज का समाज सीधे अपने ऊपर उठाये हुए है। आखिर कुष्ठ-धामों या लेपर असाइलमों में कितने लोगों को रखा जा सकता है, जब कि भारत में कुष्ठ-रोगियों की कुल संख्या २५ लाख के लगभग है। सच बात तो यह है कि जो कुष्ठ रोगी अपंग, विकलांग और भिखारी बन गये उनसे समाज को कोई डर और हानि नहीं है; क्योंकि वे समाज में जाहिर हो जाते हैं। लोग उनसे सम्पर्क बचाते हैं। परन्तु समाज के लिए मुख्य समस्या उन रोगियों की है, जो अपने रोग को भीतर छिपाये हुए हैं और सीधे समाज के सम्पर्क में रहकर रोग का प्रसार कर रहे हैं।

अपंग भिखारी कुष्ठ-रोगी समाज के लिए केवल उतनी ही समस्या हैं जितना कि

www.vinoba.in

बेरोजगारी, भूख और दूसरे प्रकार के भिखारी। उनके बारे में भी कुछ सोचना ही चाहिए; लेकिन जैसा कि मैंने ऊपर बताया है, छिपे हुए कुष्ठ-रोगी मुख्य रूप से कुष्ठ-समस्या हैं। जैसा कि पू० मनोहर दिवाण और डा० वारदेकर—जो विश्व प्रसिद्ध कुष्ठ-सेवक और कुष्ठ-रोग विशेषज्ञ हैं कहते हैं—कुष्ठ-समस्या पर वैज्ञानिक तरीके से कार्य करने की आवश्यकता है, अन्यथा कुष्ठ-सेवा-कार्य भी केवल बड़ी संस्थाएँ कायम करने और उनके माध्यम से सेवा का वैभव प्रदर्शन का साधन-मात्र बनकर रह जायेगा और कुष्ठ-समस्या अपनी जगह ज्यों-की-त्यों रह जायेगी।

पंजाब की मिशनरी संस्थाओं की विकृतपद्धति

पंजाब में फिरोजपुर, लुधियाना, अम्बाला, होशियारपुर आदि में ऐसी कुष्ठ सेवा-संस्थाएँ हैं, जिनमें पंजाब के बाहर के दूसरे प्रान्तों से आ-आकर एक-एक जगह पर सैकड़ों से अधिक कुष्ठ-रोगी एकत्र हैं। उन कुष्ठ-बस्तियों या आश्रमों में प्रबन्ध रोगियों के हाथ में ही है। वहाँ दवा-दारू का ठीक प्रबन्ध नहीं है। बस केवल रोगी रहते हैं और भीख माँगकर अपना गुजारा करते हैं। कई स्त्री-पुरुष रोगियों ने आपस में शादी भी कर ली है। उनके बच्चे भी हैं, जिनको विदेशी ईसाई मिशनरी खरीद लेते हैं और उनका अपने ढंग से पालन-पोषण करके ईसाई बनाते हैं। सरकार के द्वारा दवा आदि तथा अन्य सहायता इन संस्थाओं को मिलती रहती है, लेकिन उस सहायता के ठीक उपयोग के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता।

कुष्ठ-सेवा-कार्य में विदेशी ईसाई मिशनरियों की अब तक काफी ख्याति रही है, लेकिन उनकी सेवा का अब भंडाफोड़ हो चुका है। उनका मुख्य कार्य धर्म-परिवर्तन रहा है और सेवा उसका माध्यम। धर्म-परिवर्तन पर अब रोक लगने के कारण कुष्ठ-सेवा-कार्य में उनकी खास रुचि नहीं रह गयी है। तरन-तारन (अमृतसर) में ईसाई मिशनरियों की एक कुष्ठ-संस्था है, जिसमें करीब चार सौ रोगी रहते थे। वहाँ सुबह चर्च में प्रार्थना के समय ही लोगों की हाजिरी लगती थी और जो लोग चर्च में नहीं जाते थे उनको खाना देना बन्द कर दिया गया। काफी झगड़ा बढ़ा। संस्था के व्यवस्थापकों ने पुलिस की सहायता से रोगियों को पीटकर बाहर खदेड़ दिया। अब वहाँ साठ रोगी रह गये हैं।

कुछ पेशेवर कुष्ठ-सेवक नेता

उत्तर प्रदेश में देहरादून, ऋषिकेश, मेरठ, मुरादाबाद में कुष्ठ-सेवा-संस्थाएँ हैं। उनमें जितने रोगी रहते हैं उनसे कई गुना अधिक रोगी उन संस्थाओं के पास में अपनी बस्ती बनाकर रहते हैं। वे भीख माँगकर अपना गुजारा करते हैं। इन व्यक्तियों में अनेक प्रकार की अपराध-वृत्ति के लोग हैं जो जुआ खेलते हैं, शराब पीते हैं। उनमें लड़कियों को एक जगह से बहकाकर दूसरी जगह लेकर बसनेवाले भी रहते हैं। इन भिखारी कुष्ठ-रोगियों का अपना अखिल भारतीय संगठन है। इनके अपने नेता हैं, जो इनकी समस्याओं का समाधान ढूँढ़ते और घूमते रहते हैं। ये नेता इन रोगियों से अपनी फीस लेते हैं, जो प्रतिदिन पच्चीस रुपये तक होती है।

वैज्ञानिक सेवा-कार्य की कुछ संस्थाएँ

उत्तर प्रदेश में गोरखपुर एक ऐसी संस्था है, जहाँ वैज्ञानिक ढंग से सेवा-कार्य होता है और इसके पड़ोस में भिखारियों की कोई बस्ती नहीं है। इसके अलावा बस्ती, देवरिया, मुरादाबाद और गोंडा में भी अच्छा काम चल रहा है। इन जगहों में समाज-सेवी संस्थाएँ सही दिशा में अपना काम आगे बढ़ा रही हैं। समग्र सेवा आश्रम, रतनूपुर, जौनपुर एक ऐसी संस्था है, जहाँ जनाधार के बल पर हजारों रोगियों की चिकित्सा का प्रबन्ध है।

बनारस में एक-दो संस्थाएँ कुष्ठ-सेवा-कार्य में लगी हैं, लेकिन उनका दृष्टिकोण कुष्ठ-रोग-समस्या के हल की तरफ न होकर केवल भिखारी कुष्ठ-रोगियों तक ही सीमित है। यदि बनारस की कुष्ठ-संस्थाएँ भिखारी कुष्ठ-रोगियों से दो कदम आगे बढ़कर कुष्ठ-रोग उन्मूलन की तरफ बढ़ सकें तो बहुत काम कर सकती हैं।

आगरा में जापानी लोग कुष्ठ-सेवा कार्य में लगे हैं। संसार में जो भी अच्छा-से-अच्छा चिकित्सा का साधन है वह सब वहाँ पर कुष्ठ-रोगियों के लिए उपलब्ध कराने का प्रयास वह संस्था कर रही है।

सरकार के द्वारा भी कुष्ठ-सेवा-कार्य कई जगहों में हो रहा है। एक जगह जहाँ ६४ बिस्तरों का सजा-सजाया अस्पताल और ३५ एकड़ संस्था की जमीन है वहाँ १३ रोगी और २१ कर्मचारी हैं।

—मारकण्डेय

समग्र सेवा आश्रम, रतनूपुर
जौनपुर (उ० प्र०)

दैनंदिनी १९६९

गांधी-शताब्दी के अवसर पर १९६९ की जो दैनंदिनी हमारे यहाँ से प्रकाशित की गयी है उसका स्टाक बहुत ही कम बचा है, अतः वे संस्थाएँ, जो दैनंदिनी मँगाना चाहती हैं, रकम अग्रिम भिजवाकर या वी० पी० या बैंक की मार्फत प्राप्त कर लें, अन्यथा गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी निराश होना पड़ेगा।

आकार		मूल्य प्रति
क्राउन	७॥" × ५"	३.००
डिमाई	९" × ५॥"	३.५०

५० या उससे अधिक दैनंदिनियाँ एकसाथ मँगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन और ग्राहक के निकटतम स्टेशन तक दैनंदिनी फ्री डिलेवरी से भिजवायी जाती है।

संचालक
सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१

www.vinoba.in

• महाराष्ट्र सरकार का आश्चर्यजनक आदेश
• जुआ और लॉटरी
• उद्योग-धन्धों का सामाजिक उत्तरदायित्व

ताजा समाचारों के अनुसार महाराष्ट्र प्रदेश की राज्य सरकार ने प्रदेश के हाऊसिंग बोर्ड को हिदायत दी है कि बोर्ड के मातहत जो मकान या निवास हैं वे उन लोगों को न दिये जायँ जिनके तीन या तीन से अधिक बच्चे हों, और जो अपनी दरख्वास्त के साथ वन्ध्यीकरण या खस्सी कराने का प्रमाणपत्र पेश न करें।

अगर यह सही है तो राज्य सरकार का इस प्रकार का निर्देश आश्चर्यजनक ही नहीं, कई दृष्टियों से अत्यन्त आपत्तिजनक भी है। परिवार-नियोजन के बारे में सरकारी नीति से हम परिचित हैं। उसके कुछ पहलुओं से हम सहमत नहीं हैं, लेकिन वह इस टिप्पणी की चर्चा का विषय नहीं है। सरकार जो नीति बनाती है उसके अनुसार काम करने और उस नीति को आगे बढ़ाने का उसका कर्तव्य है। लेकिन इस कर्तव्य के पालन में भी सरकार को कुछ मर्यादाओं का ध्यान रखना आवश्यक है, उसमें भी खासकर ऐसी नीतियों के बारे में, जिनका नागरिक के व्यक्तिगत जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध हो।

यह माना जाता है कि जनतंत्र में सरकार जनता के बहुमत का प्रतिनिधित्व करती है, और इसलिए उसके निर्णय सभी को मान्य और सब पर लागू होने चाहिए। यह ठीक भी है। लेकिन फिर भी अपनी नीतियों को कार्यान्वित करने में सरकार को अपने अधिकार और सत्ता का उपयोग विवेक के साथ करना चाहिए। कुछ तो आज की परिस्थितियों के कारण, और कुछ जान-बूझकर, आज की सरकारों ने अपने काम का दायरा बहुत व्यापक कर लिया है। इसलिए सरकार के निर्णय और उसकी नीतियाँ नागरिक-जीवन के अन्तरंग-से-अन्तरंग पहलू को छूने लगी हैं। राष्ट्र के अस्तित्व, उसकी सुरक्षा, और आन्तरिक शान्ति की बात अलग है, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि इसके अलावा अन्य बातों से सम्बन्धित सरकारी नीति-नियमों को भी उतनी ही कड़ाई के साथ जनता पर लागू किया जाय। खास करके ऐसे मामलों में जो व्यक्ति से निजी और सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखते हों, सरकार को अपनी नीतियाँ जबरदस्ती लादने के बजाय उनके लिए नागरिकों का समर्थन और स्वीकृति प्राप्त करने के लिए शिक्षण और प्रचार पर ही ज्यादा भरोसा रखना चाहिए।

महाराष्ट्र सरकार का यह निर्देश कि हाऊसिंग बोर्ड के मकानों का अलाटमेण्ट उन लोगों के नाम न हो, जिनके बच्चों की संख्या अधिक होते हुए जिन्होंने, स्त्री हो तो अपने को वन्ध्या और पुरुष हो तो अपने को खस्सी नहीं कराया हो, बहुत ही बेहूदा और आपत्तिजनक है। हमें शक है कि संविधान की दृष्टि से भी इस प्रकार का पक्षपात करने का सरकार को कोई अधिकार है। सरकार अपनी नीतियाँ लादने के लिए इस प्रकार कुछ लोगों को आवश्यक सुविधाओं से वंचित नहीं रख सकती। सार्वजनिक खजाने से दी जानेवाली सुविधाओं में इस तरह का पक्षपात हमारे खयाल से अवैधानिक है। इसके अलावा, इस प्रश्न का मानवीय पहलू भी है। सब जानते हैं कि शहरों में आवास की समस्या बहुत कठिन होती है। लेकिन भोजन और वस्त्र की तरह आवास भी मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओं में से है और किसी भी नागरिक को अमुक सरकारी नीति के पालन के लिए मजबूर करने की दृष्टि से उसको प्राथमिक आवश्यकता से वंचित करना नादिरशाही में ही शुमार हो सकता है। हमारा खयाल है कि यह निर्देश राज्य सरकार के किसी जरूरत से ज्यादा वफादारी साबित करना चाहनेवाली सरकारी अधिकारी की सूझ है। अगर राज्य सरकार ऐसे पक्षपातपूर्ण, निकम्मे और आपत्तिजनक आदेश को वापस नहीं लेती है तो हाईकोर्ट में उसको चुनौती दी जानी चाहिए।

× × ×

दिल्ली में सराय रोहिल्ला के एक मोहल्ले में भैया-दूज की रात को एक मकान पर छापा मारकर वहाँ जुआ खेलनेवाले १३ लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। जुआ खेलनेवाले आसपास की बस्ती के गरीब लोग थे। उनके पास से कुल १७६ रुपये बरामद हुए।

इस प्रसंग में एक प्रश्न खड़ा होता है। हिन्दुस्तान में जब सरकारें स्वयं लॉटरी चलाने लगी हैं तब हमारी दृष्टि से उनको कोई नैतिक अधिकार नहीं रह गया है कि वे जुए पर पाबन्दी कायम रखें और जुआ खेलने पर लोगों को सजा दें। जुए में और लॉटरी में सामाजिक या मानवीय दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है। दोनों के लिए प्रेरणा 'बिना मेहनत की कमाई' करने की इच्छा में से आती है और इसीलिए मनुष्य की वृत्ति, उसके चरित्र आदि पर दोनों का समान असर पड़ता है। समाज में काहिली, अकर्मण्यता, मेहनती जीवन से विमुखता, लोभ आदि दुर्गुण, दोनों के कारण फैलते हैं। फर्क है तो शायद इतना ही कि लॉटरी की आमदनी में सरकार बड़ी हिस्सेदार है और छिपे-चोरी जुए के खेल से उसे कुछ नहीं मिलता। पर इसका उपाय तो आसानी से हो सकता है। सरकार जुआ खेलने पर पाबन्दी उठा ले और उसको भी उसी प्रकार लाइसेन्स के जरिये नियंत्रित करें जैसे वह और धन्धों को करती है। लेकिन अपनी ओर से लॉटरी चलानेवाली सरकार को जुए को अनैतिक और असामाजिक मानकर उस पर प्रतिबन्ध कायम रखने का कोई अधिकार नहीं है। दोनों बातें एक-दूसरे से विसंगत हैं।

× × ×

सर्वोदय आन्दोलन में एक बड़ा प्रश्न बार-बार हमारे सामने आता है कि जिस तरह भूमि-समस्या के हल और गाँवों की

आर्थिक पुनर्रचना के लिए हमने भूदान-ग्रामदान का कार्यक्रम पेश किया है उस तरह नगर-जीवन और उद्योग-धन्धों के परिवर्तन के लिए हमारा क्या कार्यक्रम हो सकता है। नगरों में और उद्योग-व्यापार में मालकियत-विसर्जन तथा 'शेअरिंग' के तत्त्व किस तरह दाखिल किये जा सकते हैं ?

जिस तरह शुरू में भूदान के कार्यक्रम के जरिये वातावरण निर्माण करके और उसके प्रत्यक्ष अनुभव के सहारे हम लोग ग्रामदान पर पहुँचे उसी तरह उद्योग-धन्धों के क्षेत्र में पहला कदम उद्योग-धन्धों की सामाजिक जिम्मेदारी से सम्बन्धित कार्यक्रम का हो सकता है। व्यापार में शुद्ध व्यवहार—फेअर ट्रेड प्रेक्टिसेज—अर्थात् उचित मूल्य, निर्धारित क्वालिटी, सही नापतौल, मिलावट न करना आदि के कार्यक्रम व्यापक पैमाने पर एक आन्दोलन के रूप में चलाये जायँ। इससे यह वातावरण बनेगा कि उद्योग-व्यापार केवल व्यक्तिगत मुनाफे के लिए नहीं हैं, उनकी समाज के प्रति भी कुछ जिम्मेदारी है श्री रामकृष्ण बजाज ने महाराष्ट्र में और श्री टोकरसी कापडिया ने आंध्र में जो प्रयोग शुरू किये हैं वे जाहिर करते हैं कि प्रयत्न करने पर व्यापारी समाज में ऐसे लोगों को आगे लाया जा सकता है, जो इस कार्यक्रम को उठा लें।

इसके बाद दूसरा कदम उद्योग-संस्थानों की मालकियत से सम्बन्धित होगा। वैसे आज की बड़े पैमाने की आर्थिक रचना में 'मालकियत' का प्रश्न एक तरह से गौण हो गया है, प्रत्यक्ष मालिकी किसीकी निश्चित नहीं कही जा सकती, फिर भी जिस स्वरूप में जो मालकियत है उसे भी क्या सार्वजनिक या सामाजिक रूप नहीं दिया जा सकता, यह सोचना होगा। हालाँकि मुख्य बात उद्योगों का संचालन करनेवालों के रुख या मनोवृत्ति की है, फिर भी शायद उद्योगों की मालकियत सार्वजनिक ट्रस्टों के रूप में परिवर्तित हो सके तो ठीक होगा। इस क्षेत्र में भी दुनिया के विभिन्न देशों में प्रयोग होते रहे हैं—इंग्लैण्ड में स्काट बाडर का, जर्मनी में जाइस का, नार्वे में टैंडबर्ग का, आदि। वैसे तो पूँजीवादी देशों में भी उद्योग के क्षेत्र में ट्रस्टों की कल्पना नयी नहीं है, कई कम्पनियों की बहुत-सी पूँजी ट्रस्टों की ही है. पर यह व्यवस्था अधिकतर सरकारी टैक्स को बचाकर उसका उपयोग अपने द्वारा करने की दृष्टि से लागू की गयी होती है. सिद्धान्ततः व्यक्तिगत मालकियत के विसर्जन के लिए नहीं, लेकिन समाज के प्रति उत्तरदायी उद्योग-धन्धों के संगठन का स्वरूप क्या हो सकता है, इस सम्बन्ध में इन ट्रस्टों के विधान, नियम आदि से मदद मिल सकती है।

काम का तीसरा पहलू नगरों में बसने-वाले परिवारों के परस्पर सहयोग और संगठन से सम्बन्धित है, जिससे नगरों में सामाजिकता, एक-दूसरे के सुख-दुःख में परस्पर सहयोग करने और हिस्सा लेने की भावना का तथा लोकशक्ति का चाहे मर्यादित ही सही, विकास हो सके। इस श्रेणी में विले-पार्ले—बम्बई में हो रहे प्रयोग जैसी चीजें आती हैं। आशा है उद्योग-धन्धों और शहरों के कार्यक्रम में दिलचस्पी रखनेवाले साथी उपरोक्त बातों पर विचार करेंगे और चर्चा को आगे बढ़ायेंगे।

—सिद्धराज ढड्ढा

www.vinoba.in

सेठ सोहनलालजी दूगड़ : एक विलक्षण व्यक्तित्व

[सार्वजनिक क्षेत्र में काम करनेवाले बहुत-से लोग, खासकर उत्तर भारत और हिन्दी प्रदेशों में, सेठ सोहनलालजी दूगड़ के नाम से परिचित हैं। अभी कुछ दिन पूर्व कलकत्ते में उनका निधन हो गया !—सं०]

'सेठ' तो बहुत हैं, सेठों में देनेवाले भी कई होते हैं, पर सेठ सोहनलालजी दूगड़ उन सबसे भिन्न थे। उनके जैसा देनेवाला इन दिनों शायद ही कोई हुआ हो। उनके पास से खाली हाथ कोई कभी नहीं लौटा होगा सो बात तो नहीं है, क्योंकि बीच-बीच में जब कभी उनका खजाना खाली होता—वे 'खोइ' में होते—तब वे खेद के साथ माफी चाह लेते थे। इसके अलावा उनकी अपनी पसन्दगी-नापसन्दगी भी रहती थी। पर यह भेद कभी भी जाति, धर्म, पंथ, पक्ष या ऐसे किसी ओछे या संकुचित खयाल से वे नहीं करते थे। हर 'प्रगतिशील' और समाजहित के काम के लिए सदा उनका हाथ खुला रहता था—चाहे लेनेवाला इस सम्प्रदाय का हो या उसका, इस धर्म का हो या उसका, कम्युनिस्ट हो या कांग्रेसी, वैज्ञानिक हो अथवा संत-महात्मा !

किसी प्रलोभन से, किसी दबाव से या किसी मोह से देते हुए, उन्हें न कभी मैंने जाना न सुना, न दान के जरिये अपना महत्त्व या प्रभाव जमाने की कोशिश कभी उन्होंने की। देना उनका सहज स्वभाव था। इतनी सहजता और उदारता से देते थे कि सामनेवाला भी कभी-कभी हैरान हो जाता था। गिड़गिड़ाने या खुशामद करने से वे देते होंगे इसमें मुझे शक है, क्योंकि वे स्वयं निर्भय, स्वतंत्र और मुक्त वृत्ति के थे।

यह सब तो उनके 'दानी' व्यक्तित्व के गुण थे। पर वे केवल 'दानी' नहीं थे। उनके खुद के अन्तर में समाज-सुधार की एक अजीब तड़प थी। पोंगापंथी, गुरुडम, सत्ता-सम्पत्ति या धर्म के मठों आदि में उनका विश्वास नहीं था। वे इन सबको खुलकर आलोचना करते थे, जो अक्सर 'सेठों' से नहीं होता। पर दरअसल वे उस माने में सेठ या पैसेवाले थे ही नहीं। न पैसे का उनको मोह था, न पैसे को वे अपने निजी मौज-शौक की चीज मानते थे। पैसा उनके पास आता था और जाता था।

कलकत्ते के सट्टा-बाजार के वे 'बादशाह' माने जाते थे। बातों बातों में लाखों का वारा-न्यारा करते थे। सट्टा-बाजार पर उनकी धाक थी। सट्टा खेलना भी उनका स्वभाव ही बन गया था। कई बार उन्होंने सोचा और कहा भी कि अब बहुत हो चुका, अब वे सट्टा खेलना छोड़ देंगे, कलकत्ता छोड़कर वे एक बार चले भी

गये थे। लेकिन स्वभाव का वेग उन्हें फिर वहाँ खींच ले गया, और फिर सट्टा-बाजार का धन खिचकर उनके पास आने लगा।

समाज-सुधार के लिए वे केवल धन ही नहीं देते थे, स्वयं उसके प्रचारक भी थे। सभाओं में बेधड़क होकर बोलते थे।

इस प्रकार उदारता, सहज दानशीलता, सुधारप्रियता, निर्भीकता और अन्तर की सरलता का एक विलक्षण मिश्रण सेठ सोहनलालजी दूगड़ के व्यक्तित्व में था। उनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति मुश्किल है। उनका स्मरण बहुतों को प्रेरणा देता रहेगा।

—सिद्धराज ढड्ढा

महिला लोकयात्रा

२५ अक्तूबर '६७ को कस्तूरबाग्राम, इंदौर से प्रारम्भ हुई लोकयात्रा का २० अक्तूबर '६८ से हरियाणा में कार्यक्रम शुरू हुआ। लगभग २ हजार मील की पदयात्रा द्वारा मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों में महिला-जागरण का संदेश देती हुई लोकयात्री बहनों का कार्यक्रम अब हरियाणा में शुरू हुआ है। स्मरणीय है कि विनोबाजी की प्रेरणा से १२ वर्ष तक लगातार यात्रा करते रहने का संकल्प लेकर यह कार्यक्रम शुरू हुआ है। लोकयात्री बहनों से सम्पर्क का पता :

मा० गांधी स्मारक निधि, पट्टीकल्याणा,
जिला : करनाल, हरियाणा

क्षेत्रीय महिला शिविर

राष्ट्रीय बापू जन्म-शताब्दी की महिला बाल उपसमिति की ओर से १० अक्तूबर ६७ से १७ अक्तूबर '६८ तक सेवापुरी, वाराणसी में एक क्षेत्रीय महिला शिविर का आयोजन किया गया। इसमें बहनों ने लगातार आठ दिन साथ बैठकर विचार-विमर्श किया कि समिति के द्वारा लिये गये कार्यक्रमों के कार्यान्वयन को किस प्रकार गतिशील कराया जाय तथा नयी पीढ़ी की बहनों को इस कार्य के लिए कैसे प्रेरित किया जाय। इस शिविर में उत्तर प्रदेश की २८, म० प्र० की १२ तथा बिहार की ७ बहनों के अतिरिक्त १५ बहनों ने अतिथि के रूप में भाग लिया। —संतोष निगम

गांधी शताब्दी वर्ष १९६८–६९

गांधी-विनोबा का ग्राम-स्वराज्य का संदेश गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचाइए और जन-जन को उसके लिए कृत-संकल्प कराइए। सच्चे स्वराज्य का अब यह ही रास्ता है।

इस निमित्त उपसमिति द्वारा निम्न सामग्री पुरस्कृत/प्रकाशित की गयी है :—

पुस्तकें—

(१) जनता का राज्य—लेखक : श्री मनमोहन चौधरी, पृष्ठ ६२, मूल्य २५ पैसे। ग्रामदान-आन्दोलन की सरल-सुबोध जानकारी।

(२) Freedom for the Masses—'जनता का राज' का अनुवाद, पृष्ठ ७६, मूल्य २५ पैसे।

(३) शान्तिसेना परिचय—लेखक : श्री नारायण देसाई, पृष्ठ ११८, मूल्य ७५ पैसे। शान्तिसेना विचार, संगठन, कार्यक्रम आदि की जानकारी देनेवाली, हर शान्ति-प्रेमी नागरिक के पास रखी जाने योग्य।

(४) हत्या एक आकार की—लेखक : श्री ललित सहगल, पृष्ठ ९६, मूल्य रु० ३.५०। गांधीजी के हत्यारे के हृदय में हत्या से पूर्व चलनेवाले अन्तर्द्वन्द्व का प्रभावपूर्ण सशक्त चित्रण।

(५) A Great Society of small Communities—लेखक : सुगत दासगुप्ता, पृष्ठ ७८, मूल्य रु० १०.००। क्रान्ति में ग्रामदान-आन्दोलन का स्थान तथा ग्रामदानी गाँवों के सन्दर्भ में आन्दोलन को गतिविधि का विवेचन और समीक्षा।

वितरण और प्रदर्शन की सामग्री—

फोल्डर—(१) गांधी, गाँव और ग्रामदान (२) गांधी, गाँव और शान्ति (३) ग्रामदान क्यों और कैसे ? (४) ग्रामदान क्या और क्यों ? (५) ग्रामदान के बाद क्या ? (६) ग्रामसभा का गठन और कार्य (७) गाँव-गाँव में खादी (८) सुलभ ग्रामदान (९) देखिए : ग्रामदान के कुछ नमूने।

पोस्टर—(१) गांधी ने चाहा था : सच्चा स्वराज्य (२) गांधी ने चाहा था : स्वावलम्बन (३) गांधी ने चाहा था : अहिंसक समाज (४) ग्रामदान से क्या होगा ? (५) गांधी जन्म-शताब्दी और सर्वोदय-पर्व।

सामग्री मर्यादित रूप में निम्न स्थानों से प्राप्त की जा सकती है :—

(१) गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी जन्म-शताब्दी समिति), डूंकलिया भवन, कुंदीगरों का भैरों, जयपुर—३ (राजस्थान)। (२) सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी–१ (उत्तर प्रदेश)

राष्ट्रीय गांधी जन्म-शताब्दी समिति की गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति द्वारा प्रसारित

www.vinoba.in

श्रद्धा, विश्वास और भगवान के बल पर प्रदेशदान होकर रहेगा

प्रान्त की सब रचनात्मक संस्थाएँ अपनी कार्यकर्ता-शक्ति का दसवाँ भाग प्रान्तदान आन्दोलन के लिए निकालें

प्रान्तदान अभियान के संयोजन हेतु बुलायी गयी सभा का निवेदन

जयपुर, २८ अक्तूबर। राजस्थान प्रान्तदान अभियान के संयोजक श्री गोकुलभाई भट्ट के आवाहन पर २७ अक्तूबर को प्रान्त की कुछ रचनात्मक संस्थाओं के संचालकों व प्रमुख लोगों की एक सभा स्थानीय 'किशोर-निवास' में हुई। इस सभा में विनोबाजी के प्रदेशदान आवाहन का कार्यकर्ताओं ने स्वागत करते हुए कार्य के प्रारम्भ के तौर पर राजस्थान की रचनात्मक संस्थाओं से अपनी वर्तमान कार्यकर्ता-शक्ति का दसवाँ हिस्सा इस अभियान के निमित्त निकालने का निवेदन करने पर जोर दिया।

सभा के प्रारम्भ में श्री गोकुलभाई ने अपने प्रेरणादायी भाषण में कहा कि शराबबन्दी के काम में हम सब जुटे तो उससे हमारा बल भी बढ़ा और सरकार को भी इस निमित्त कुछ करने की प्रेरणा मिली। जब यह आन्दोलन शुरू हुआ था तो मुझे लगा कि इस निमित्त हमारी कसौटी का मौका आयेगा। इसमें बहुत ज्यादा तो हमारी कसौटी नहीं हुई और भगवान की कृपा से जल्दी ही हमें थोड़ी-बहुत सफलता भी मिल गयी। आज प्रदेशदान की जिम्मेदारी उठाते हुए भी मैं ऐसा ही महसूस कर रहा हूँ। आप लोगों का मेरे लिए जो स्नेह व आदर है, उसीके बल पर यह मैंने स्वीकार किया है।

आपने कहा कि जब हम आज तक जिलादान तो क्या, प्रखंडदान तक में भी कामयाब नहीं हुए तो प्रान्तदान की बात हास्यास्पद-सी लग सकती है, पर यदि श्रद्धा व विश्वास के बल पर हमने पूरी शक्ति से यह काम उठाया तो भगवान की मदद से यह अवश्य पूरा होनेवाला है।

आपने कहा कि जब देश गुलाम था तब मैंने जब तक देश गुलाम रहे तब तक अन्न न ग्रहण करने का प्रण किया था। सन् १९४७ में हमें जो आजादी मिली उससे मेरे मन में सन्तोष नहीं हुआ। मैंने अपनी पीड़ा गांधीजी को लिखी व उनसे पूछा कि ऐसी स्थिति में मैं अन्न चालू करूँ या नहीं तो बापू ने मुझसे सहमति प्रकट करते हुए कहा कि अभी सच्चे हिन्द स्वराज्य के लिए काम करना बाकी है, पर अन्न चालू करना या नहीं वह मेरे पर छोड़ दिया। उस समय मैंने जब तक बापू की कल्पना का ग्रामस्वराज्य न हो जाये तब तक एक समय ही अन्न ग्रहण करने का निर्णय लिया। बापू का लक्ष्य आज भी अधूरा है और मेरा एक ही समय अन्न लेने का क्रम जारी है।

आपने कहा कि विनोबाजी के भूदान आन्दोलन से मुझे पूरा सन्तोष नहीं हुआ, पर ग्रामदान की बात आंने पर लगा कि ग्रामदान के द्वारा गाँव की शक्ति जागृत व संगठित की जा सकती है और गाँव की भूमि की सारी व्यवस्था ग्रामसभा के हाथ में देकर हमारे देहात ग्राम-स्वराज्य की ओर उन्मुख हो सकते हैं। आज की हमारी ग्राम-समस्याओं का हल ग्रामदान आन्दोलन में निहित है। अतः मुझे स्पष्ट लग रहा है कि बापू के ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए विनोबा के आवाहन को स्वीकार किये बिना कोई चारा नहीं।

खादी और ग्रामोद्योग राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं
इनके सम्बन्ध में पूरी जानकारी के लिए

खादी ग्रामोद्योग पढ़िये **जागृति**

(मासिक) (पाक्षिक)

(संपादक—जगदीश नारायण वर्मा)

हिन्दी और अंग्रेजी में समानांतर प्रकाशित

प्रकाशन का चौदहवाँ वर्ष।
विश्वस्त जानकारी के आधार पर ग्राम विकास की समस्याओं और सम्भाव्यताओं पर चर्चा करनेवाली पत्रिका। खादी और ग्रामोद्योग के अतिरिक्त ग्रामीण उद्योगीकरण की सम्भावनाओं तथा शहरीकरण के प्रसार पर मुक्त विचार-विमर्श का माध्यम।
ग्रामीण धंधों के उत्पादनों में उन्नत माध्यमिक तकनालाजी के संयोजन व अनुसंधान-कार्यों की जानकारी देनेवाली मासिक पत्रिका।
वार्षिक शुल्क : २ रुपये ५० पैसे
एक अंक : २५ पैसे

प्रकाशन का बारहवाँ वर्ष।
खादी और ग्रामोद्योग कार्यक्रमों सम्बन्धी ताजे समाचार तथा ग्रामीण योजनाओं की प्रगति का मौलिक विवरण देनेवाला समाचार पाक्षिक। ग्राम-विकास की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करनेवाला समाचार-पत्र।
गाँवों में उन्नति से सम्बन्धित विषयों पर मुक्त विचार-विमर्श का माध्यम।
वार्षिक शुल्क : ४ रुपये
एक प्रति : २० पैसे

अंक-प्राप्ति के लिए लिखें
"प्रचार निर्देशालय"
खादी और ग्रामोद्योग कमीशन, 'ग्रामोदय'
इर्ला रोड, विलेपार्ले (पश्चिम), बम्बई—५६ एएस

आपने कहा कि यह ठीक है कि इस समय हम अकाल-सहायता या शराबबन्दी के काम को भी नहीं छोड़ सकते, पर ये सब बातें तो इसके साथ अपने आप सधनेवाली हैं। गाँव-वाले अपने हाथ में गाँव की व्यवस्था उठा लेते हैं तो ये बहुत-सी बातें तो अपने आप समाप्त हो जानेवाली हैं।

प्रदेशदान की व्यूह-रचना की दृष्टि से कई लोगों ने अपने सुझाव इस सभा में रखे, जिनमें सर्वश्री सिद्धराज ढड्ढा, गोवर्द्धन पन्त, रामेश्वर अग्रवाल, भूरेलाल बया, बद्रीप्रसाद स्वामी, लक्ष्मीचन्द भंडारी, छीतरमल गोयल, भोगीलाल पंड्या, त्रिलोकचन्द व राधाकृष्ण बजाज प्रमुख थे।

राजस्थान प्रदेशदान-अभियान कोष

जयपुर, २८ अक्तूबर। राजस्थान प्रदेश-दान अभियान के सम्बन्ध में राजस्थान की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं के संचालकों व अन्य प्रमुख लोगों की सभा श्री गोकुलभाई भट्ट के आवाहन पर गत २७ अक्तूबर को स्थानीय 'किशोर निवास' में हुई। इस सभा में श्री सिद्धराज ढड्ढा ने अपील की कि हमने प्रान्तदान जैसा बड़ा काम उठाने का निर्णय किया है तो उसके लिए काफी कार्यकर्ता-शक्ति व अर्थ की आवश्यकता होगी। अतः प्रदेशदान अभियान कोष की तत्काल स्थापना हम सबको अपने अंशदान देकर कर देनी चाहिए। •

उत्तर प्रदेशीय ग्रामदान-प्राप्ति समिति की बैठक

आगामी १६ और १७ नवम्बर '६८ को स्वराज्य आश्रम, सर्वोदयनगर, कानपुर के प्रांगण में प्रदेशीय प्रतिनिधियों की एक महत्त्व-पूर्ण बैठक होने जा रही है। समिति के संयो-जक श्री कपिलभाई ने प्राप्ति-समिति के सदस्यों तथा प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ताओं के नाम लिखे एक पत्र में कहा है कि प्रदेश में एक लाख दस हजार गाँव हैं। प्रदेशदान का संकल्प २ अक्तूबर '६९ तक पूरा करने के लिए हर जिले के लोग जिलादान-प्राप्ति के लिए एक सुव्यवस्थित योजना बनाकर लायें, ताकि बैठक में प्रदेशदान की व्यूह-रचना की जा सके।

आन्दोलन के समाचार

टीकमगढ़ के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण अध्याय जुड़ा

टीकमगढ़ : ६ नवम्बर '६८ को श्री जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में आयोजित हो रहे जिलादान-समर्पण समारोह के सिलसिले में जिले की लगभग सभी प्रमुख संस्थाओं और राजनीतिक दलों ने जनता से अपील की है कि—"लोकक्रान्ति के सन्दर्भ में मध्यप्रदेश का प्रथम जिलादान घोषित करने का सौभाग्य टीकमगढ़ को प्राप्त हुआ है। जिले में अहिंसक समाज-रचना के लिए अपनी सामूहिक अभिव्यक्ति जिलादान के रूप में हम सबने व्यक्त की है, और हम सब इस युग-परिवर्तन की प्रक्रिया में अपना सहयोग और शक्ति लगाकर समाज-परिवर्तन के महान संकल्प को पूरा करेंगे। आइये, संकल्पपूर्वक इस आयोजन को हम सफल बनायें।"

मध्यप्रदेश-दान की दिशा में

मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल के मंत्री श्री नरेन्द्र दुबे ने समस्त गांधी-शताब्दी समितियों, सर्वोदय मण्डलों और रचनात्मक संस्थाओं के नाम एक अपील प्रसारित करते हुए कहा है कि पू० विनोबाजी ने १५ से २१ नवम्बर '६८ तक का समय सरगुजा (मध्यप्रदेश) में दिया है। इस अवसर पर १७ व १८ नवम्बर '६८ को अम्बिकापुर में प्रदेश के रचनात्मक कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन आयोजित किया गया है।

उक्त सम्मेलन में अधिकाधिक संख्या में भाग लेने का निवेदन करते हुए श्री दुबे ने कहा है कि—मध्यप्रदेश के ग्वालियर सर्वोदय सम्मेलन में यह निर्णय किया गया था कि गांधी-शताब्दी वर्ष में ग्रामदान द्वारा ग्रामस्वराज्य का सन्देश प्रदेश के सभी गाँवों में पहुँचाया जायगा। इस दिशा में नम्र प्रयास हुआ है और अभी तक लगभग १५,००० गाँवों में पदयात्राएँ हो चुकी हैं, जिसके परिणामस्वरूप अब तक १ जिलादान, ६ तहसीलदान, १९ प्रखण्डदान और ४,००० ग्रामदान हुए हैं। इस समय प० निमाड़ जिले में अभियान चल रहा है और पूरा प्रयास किया जा रहा है कि १४ नवम्बर '६८ को प० निमाड़ जिलादान में आ जाय। पू० बाबा के म० प्र० आगमन पर यह जिला-दान भेंट करने के लिए कार्यकर्ता साथी अथक परिश्रम कर रहे हैं। प्रदेशदान का संकल्प प्रदेश के समस्त रचनात्मक, राज-नैतिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा संस्थाओं का, और ग्रामीण, मजदूर, उद्योगपति, शासकीय-अर्धशासकीय सभी सेवकों का संकल्प बन सके—इसके लिए पूर्व-तैयारी की आवश्यकता है। अतः हमारा आपसे सादर निवेदन है कि—

(१) आप अपने जिले की शताब्दी समिति, समस्त रचनात्मक संस्थाओं, सर्वोदय मण्डल तथा सभी मित्रों से सलाह-मशविरा कर संकल्प तथा संकल्प-पूर्ति की सम्भावित तारीख का निश्चय कर लें;

(२) जिलादान के लिए निधि-संग्रह का भी लक्ष्यांक निश्चित कर लें। तथा,

(३) "प्रदेशदान" के लिए अपने संकल्प और सम्मति के प्रतीक रूप में कम-से-कम पच्चीस क्विंटल अनाज अथवा दो हजार रुपये अपने जिले से पूज्य श्री विनोबाजी को भेंट करने का प्रयत्न करें।

विनोबाजी मध्यप्रदेश में

प्राप्त जानकारी के अनुसार विनोबाजी ने अपनी सरगुजा-यात्रा की अवधि तीन दिन के बजाय सप्ताह भर कर दी है। इसके अनुसार वे १५ से २१ नवम्बर तक सरगुजा जिले में पड़ाव करेंगे। बाबा १५ नवम्बर को रामानुजगंज में रहेंगे। यहाँ बाबा के सान्निध्य में प्रादेशिक सर्वोदय मण्डल की कार्यकारिणी समिति की बैठक आयोजित की गयी है। १७, १८, १९ नवम्बर को बाबा का पड़ाव जिले के मुख्यालय अम्बिकापुर में रहेगा।

www.vinoba.in

ग्रामदान : समाज-परिवर्तन की बुनियाद

टीकमगढ़ जिलादान-समर्पण-समारोह सम्पन्न

६ नवम्बर, '६८। पिछले १५ अगस्त, '६८ को ही जिलादान की मंजिल पूरी कर लेनेवाले मध्यप्रदेश के प्रथम जिला टीकमगढ़ में आयोजित आज के समर्पण-समारोह के अवसर पर पूरे नगर में दिनभर अत्यन्त व्यस्तता और उत्सुकतापूर्ण उत्फुल्लता का वातावरण बना रहा। बाहर से टीकमगढ़ नगर का सम्बन्ध जोड़नेवाली प्रायः हर सड़क पर सुन्दर स्वागत-द्वार बने हुए थे। शिक्षण संस्थाओं में तो ऐसा लगता था कि जैसे कोई उत्सव मनाया जा रहा हो। बुनियादी प्रशिक्षण महाविद्यालय कुण्डेश्वर से लेकर गर्ल्स कालेज तक सब जगह भरपूर चहल पहल दिखाई दे रही थी।

सुबह झांसी से जब समारोह के मुख्य अतिथि श्री जयप्रकाश नारायण टीकमगढ़ के लिए रवाना हुए तो मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले की सरहद पर जिले के जिलाधीश ने उनकी अगवानी की। मार्ग में पड़नेवाले सभी विद्यालयों ने जे०पी० का हार्दिक स्वागत किया और 'ग्राम-स्वराज्य सफल करेंगे, 'जयप्रकाश जिन्दाबाद' के नारे लगाये। टीकमगढ़ में विश्रामगृह पहुंचने पर म०प्र० विधानसभा के अध्यक्ष और प्रमुख राजनीतिक दलों के नेताओं तथा नगर के प्रमुख नागरिकों ने जे०पी० का स्वागत किया।

टीकमगढ़ से तीन मील की दूरी पर स्थित सुप्रसिद्ध जैन मंदिर के वार्षिक समारोह में श्री जयप्रकाश नारायण का स्वागत करते हुए स्थानीय जैन समाज की ओर से टीकमगढ़ में ग्रामदान-पुष्टि-कार्य के लिए एक हजार रुपये की थैली भेंट की गयी। इस स्वागत-समारोह में भाषण करते हुए जे०पी० ने कहा कि ग्रामदान के इस देशव्यापी कार्यक्रम में जैन समाज को विशेष रूप से सहयोग देना चाहिए, क्योंकि भगवान महावीर ने अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धान्तों पर आचरण का उपदेश किया था, और ग्रामदान द्वारा इन्हीं दो मूलभूत सिद्धान्तों की बुनियाद पर समाज की नयी रचना का क्रान्तिकारी प्रयास किया जा रहा है। आपने कहा कि जबतक हिंसा और परिग्रह की बुनियाद पर आधारित आज की समाज-रचना नहीं बदलेगी तब तक भगवान महावीर के सिद्धान्तों का समाज नहीं बनेगा, सच्चे जैनधर्म का विकास नहीं हो सकेगा।

सायंकाल चार बजे कन्या माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यकर्ता गोष्ठी में जे० पी० ने सक्षम कार्यकर्ताओं के अभाव की समस्या का समाधान सुझाते हुए कहा कि एक ही रास्ता दीखता है कि गाँव के लोग ही इस काम को उठा लें। आपने ग्राम-शान्तिसेना के संगठन और प्रशिक्षण को इस दिशा में बढ़ने के लिए व्यावहारिक और कारगर कदम बताया। जिलादान के बाद के कार्यक्रम की चर्चा करते हुए आपने कहा कि कम-से-कम ग्रामसभा का संगठन, बीघाकट्ठा का वितरण, ग्रामकोष का संग्रह और जो लोग ग्रामदान में अबतक शामिल नहीं हुए हैं उन्हें शरीक करने के प्राथमिक काम जल्द-से-जल्द होने चाहिए। ग्राम-स्वराज्य की राजनीतिक रचना का संकेत देते हुए जे० पी० ने कहा कि ग्रामसभा की बुनियाद पर खण्ड, जिला, प्रान्त और देश के स्तर की एक समानान्तर रचना खड़ी करने की शक्ति हमें पैदा करनी है।

कन्या विद्यालय में एक महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें लगभग ५०० महिलाओं ने भाग लिया। सम्मेलन में श्रीमती प्रभावती और सुश्री निर्मला देशपाण्डे ने मार्गदर्शन किया। जे० पी० ने बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में महिलाओं के महत्त्वपूर्ण योगदान की याद दिलाते हुए ग्राम-स्वराज्य के इस अभियान में उनसे सक्रिय होने की अपील की।

सायंकाल स्थानीय राजेन्द्र पार्क में जिलादान-समर्पण-समारोह हजारों नगर-वासियों और ग्रामदानी गाँवों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। जिले के कुल ६ प्रखण्डों के दान-पत्र प्रखण्ड के प्रतिनिधियों ने जे० पी० को समर्पित किये और उसके बाद सबने जे० पी० के साथ ग्राम-स्वराज्य की स्थापना का सामूहिक संकल्प दुहराया।

जिले में प्राप्त ग्रामदान की स्थिति :

प्रखण्ड	कुल ग्राम	ग्रामदान में
१. टीकमगढ़	१७८	१६७
२. बलदेवगढ़	१६६	१३८
३. जतारा	१०२	१२१
४. नेवाड़ी	१५४	१०४
५. पृथ्वीपुर	१५०	११७
६. पलेरा	१५३	११३

आबाद गाँव ८७२ : नाचिरागी गाँव १३१ : ग्रामदान में शामिल गाँव ७७०।

दो घंटे से भी अधिक समय के अपने लम्बे भाषण में जे० पी० ने आज के राष्ट्रीय और जागतिक संदर्भ में ग्रामदान को सारी उलझनों और समस्याओं को सुलझाने और हल करने की कुंजी बताते हुए हाल ही में मध्य-प्रदेश गांधी शताब्दी-समिति द्वारा घोषित 'प्रदेशदान' के संकल्प को गांधी जन्म-शताब्दी वर्ष में पूरा करके उनके हिन्द स्वराज्य के सपने को साकार करने की दिशा में तीव्रता से आगे बढ़ने की अपील की। आपने कहा कि कोई नेता या शासक हमारा उद्धार कर देगा, यह मनोवृत्ति बड़ी घातक है। नेताओं और शासकों के पास समस्याओं को हल करने की कोई शक्ति नहीं है, अब तो एक-मात्र शक्ति जनता के पास ही है। आपने बड़े ही दर्द के साथ अपनी हाल की विदेश-यात्राओं के अनुभव सुनाते हुए कहा कि अगर भारत की खोई हुई इज्जत और गिरी हुई हालत सुधारनी है तो नेताओं और सरकारों की ओर से नजर फेरनी होगी और जनता को खुद कन्धे-से-कन्धा मिलाकर आगे बढ़ना होगा। अन्त में आपने नगरों में भी काम शुरू करने के लिए आचार्यकुल और तरुण शान्तिसेना के कार्यक्रम की ओर ध्यान आकृष्ट किया। —राही

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति। २० पैसे
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित